

राज

**कॉमिक्स
विशेषांक**

मूल्य 20.00 संख्या 553

लुटेरा भोक्ताल

भोक्ताल



लुटेरा भोकाळ (भोकाळ)

○ लेखक : संजय गुप्ता। परिकल्पना : विवेक मोहन। संपादक : मनीष गुप्ता।
○ चित्रांकन : कदम स्टूडियो।

राज परिवार के सदस्य -



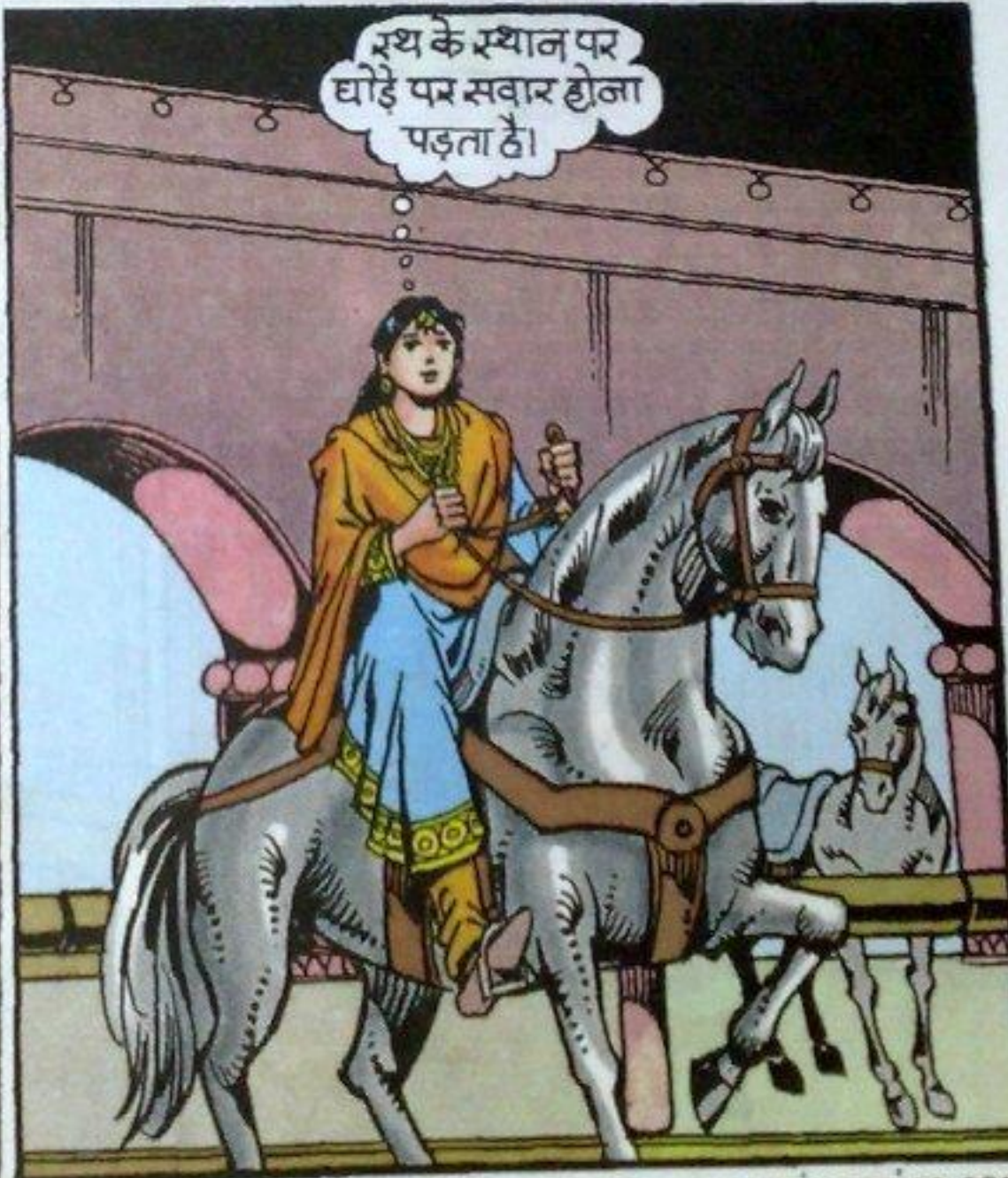
कहीं भी जाना पहरेदारों से घिरे जाना जिनकी मजबूरी है।

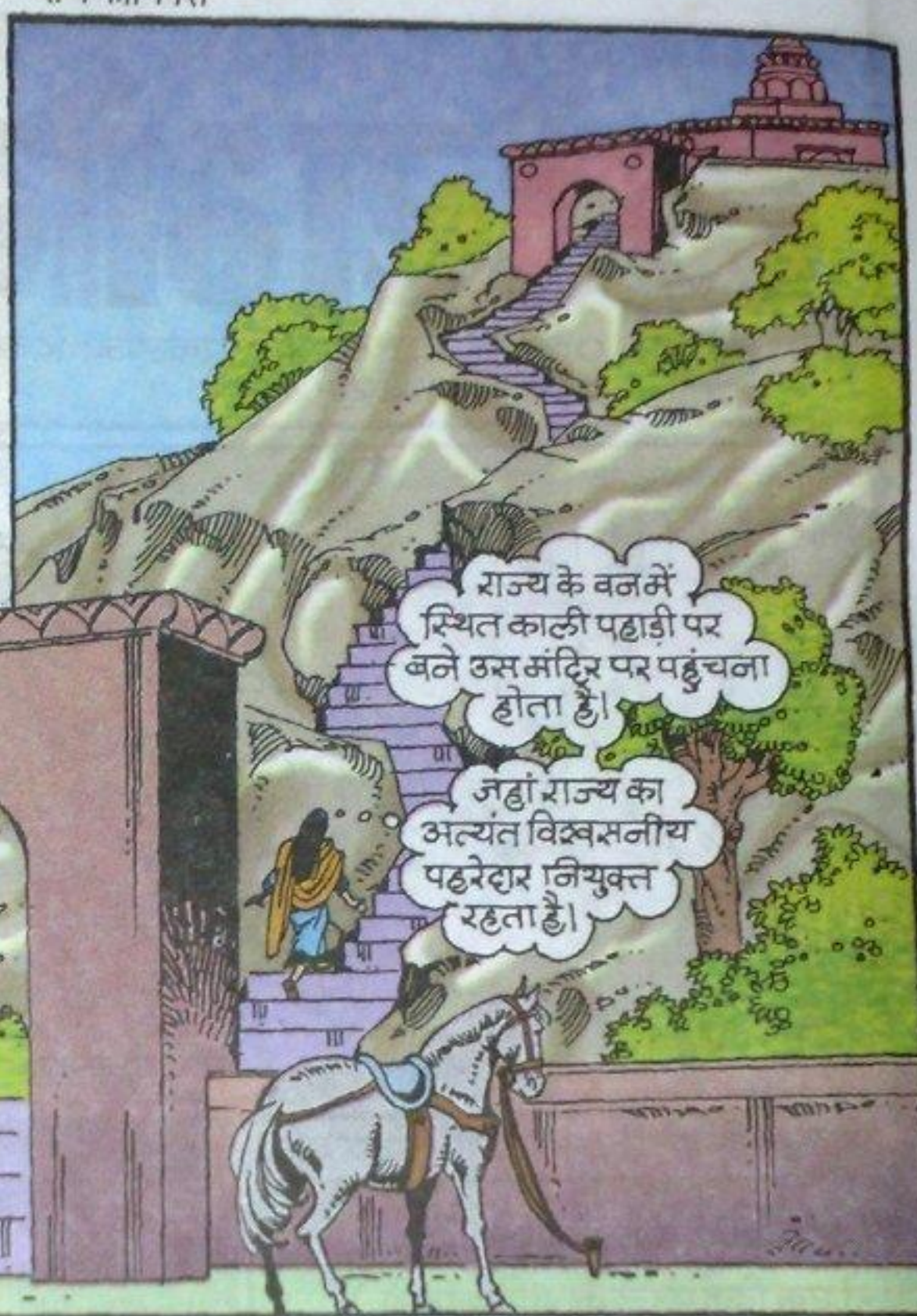
लेकिन कभी-कभी उनकी ऐसी भी मजबूरी होती है।

कल दिवाली है और दिवाली से एक दिन पहले की रात्रि को मुझे अंधकार में गुप्त रूप से महल से निकलना होता है।



रथ के स्थान पर घोड़े पर सवार होना पड़ता है।

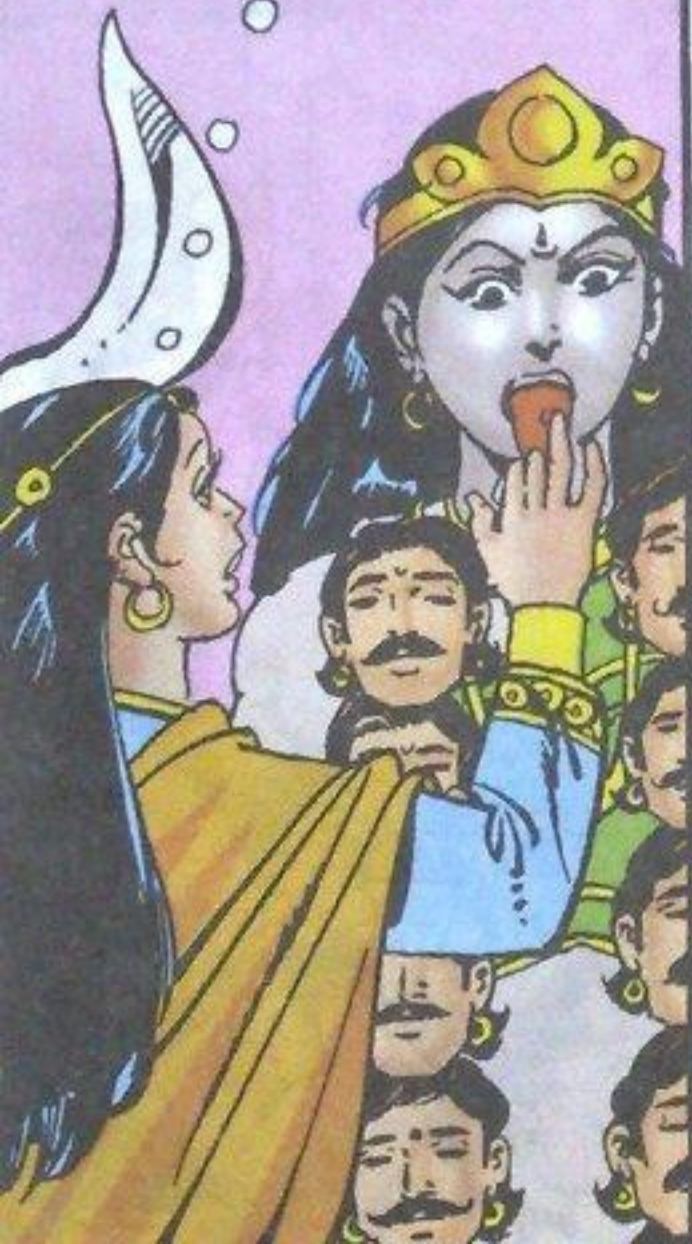




मुझे तुरन्त ही मंदिर
में प्रवेश करके मंदिर के अंदर
काली मां की विशाल प्रतिमा
तक पहुंचना होता है।



काली मां के मुख से
बाहुर निकली उनकी जिह्वा
को तिलक करना
होता है।



फिर काली
मां के चरणों में
सष्टांग प्रणाम करके
अपने माथे से काली
मां के चरणों को सात
बार छूना पड़ता है।

“इसी के साथ मां काली के खुले
मुख से एक छोटा सा त्रिशूल
निकलता है...”





लहू की बूंद के टपकने का कारण जानने के लिए ऊपर उठी श्वेता की आंखें-



और मैं उस पहरेदार
से गुप्त वाक्य ज्ञानकर उसकी
हत्या करके इसलिए वहाँ मौजूद थी
क्योंकि मुझे तेरे हाथ में थमा वह छोटा
त्रिशूल चाहिए।



ला दे मुझे
त्रिशूल।



अगर मैं तुझे
यह दूँ तो कैसा
रहेगा ?



बिल्कुल
व्यर्थ।

और जो व्यर्थ
होता है शीतोला उसे
ऐसे जमा देती है।





अब मुझे इस त्रिशूल को प्राप्त करने से कौन रोके...



... गा। ओह। ये हिम दीवार किसने गिरा दी ?

दीवारें तूफान गिराते हैं।

बड़ा म



... और इस तूफान का नाम भोकाल है।

मैं हर दिवाली से पहले की रात्रि को गुप्तरूप से श्वेता की सुरक्षा के लिए इस मंदिर तक छिपकर उसका पीछा करता आया हूँ। मैं सदा मंदिर के बाहर ही खड़ा रहता था। कभी मंदिर के आने की आवश्यकता ही नहीं पड़ी क्योंकि ...



....आज से पहले
मंदिर के अंदर ऐसी घटना कभी
नहीं घटी। ओह!

शीतोला ने बड़े-
बड़े तूफानों को ठप्पा
किया है।

भड़क



तेरी क्या
बिस्मात है।



ओह!



पलक अपकते ही भोकाल
वर्क का पुतला बन गया-

और अगली पलक अपकते ही-

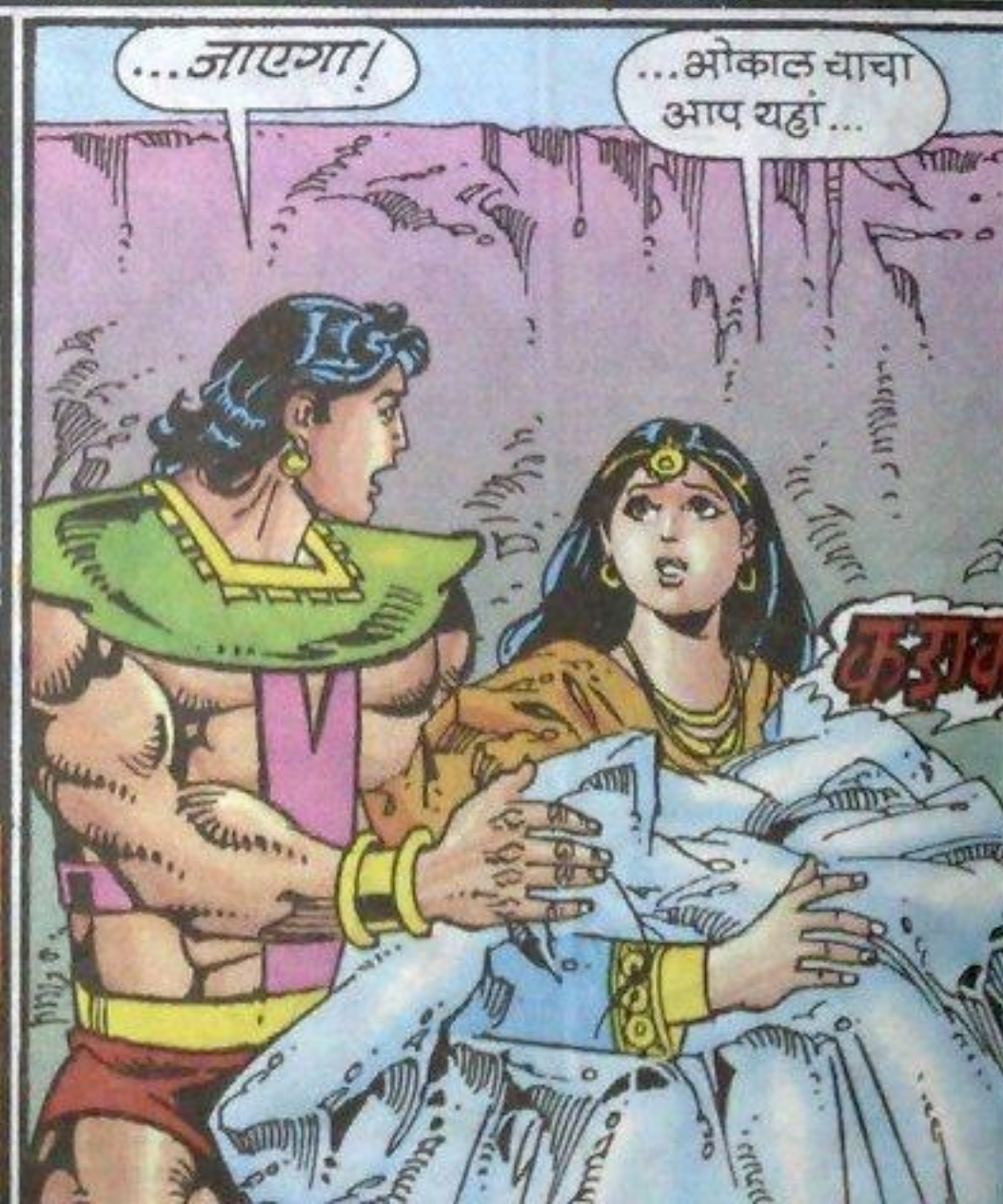
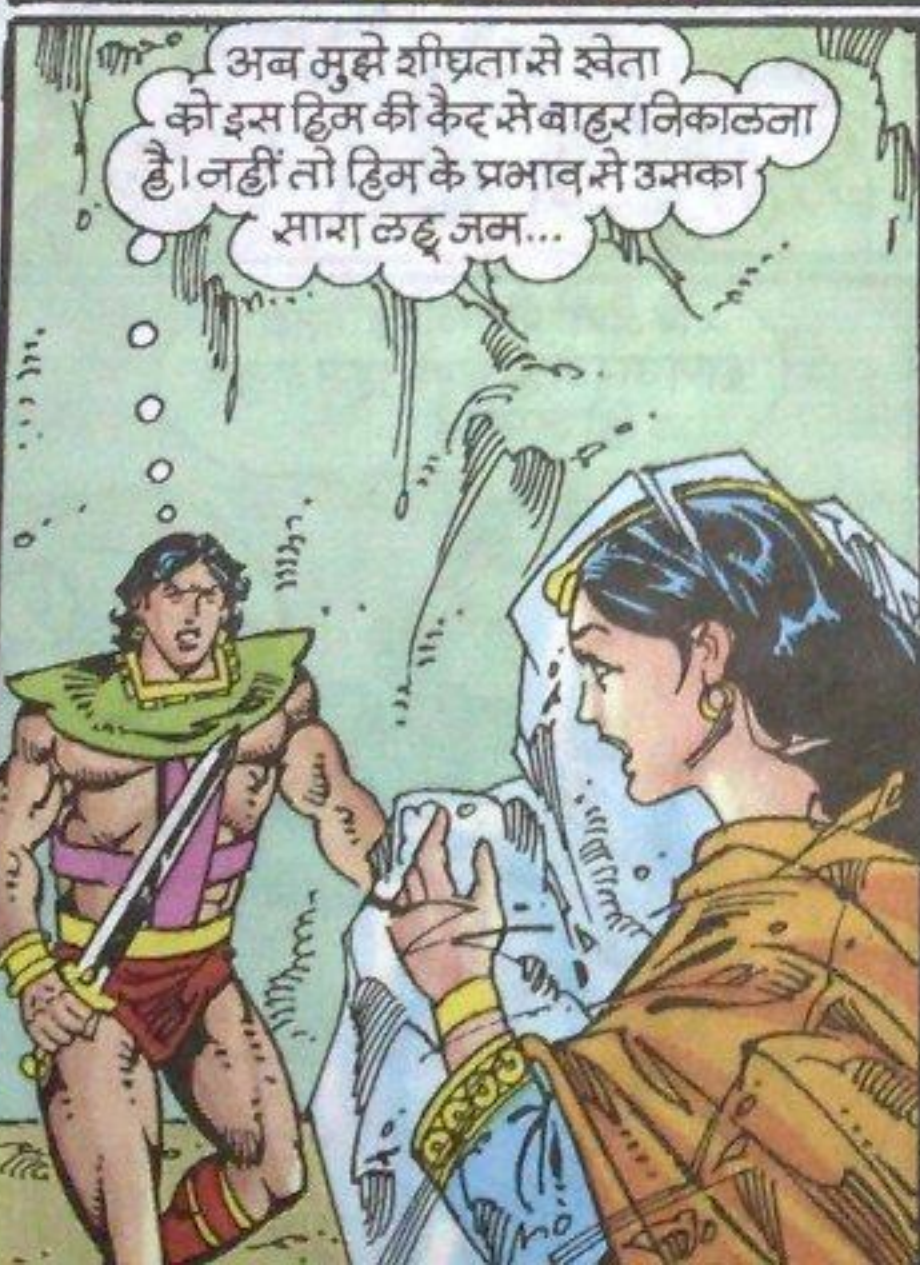
भोऽऽ काऽऽ ल

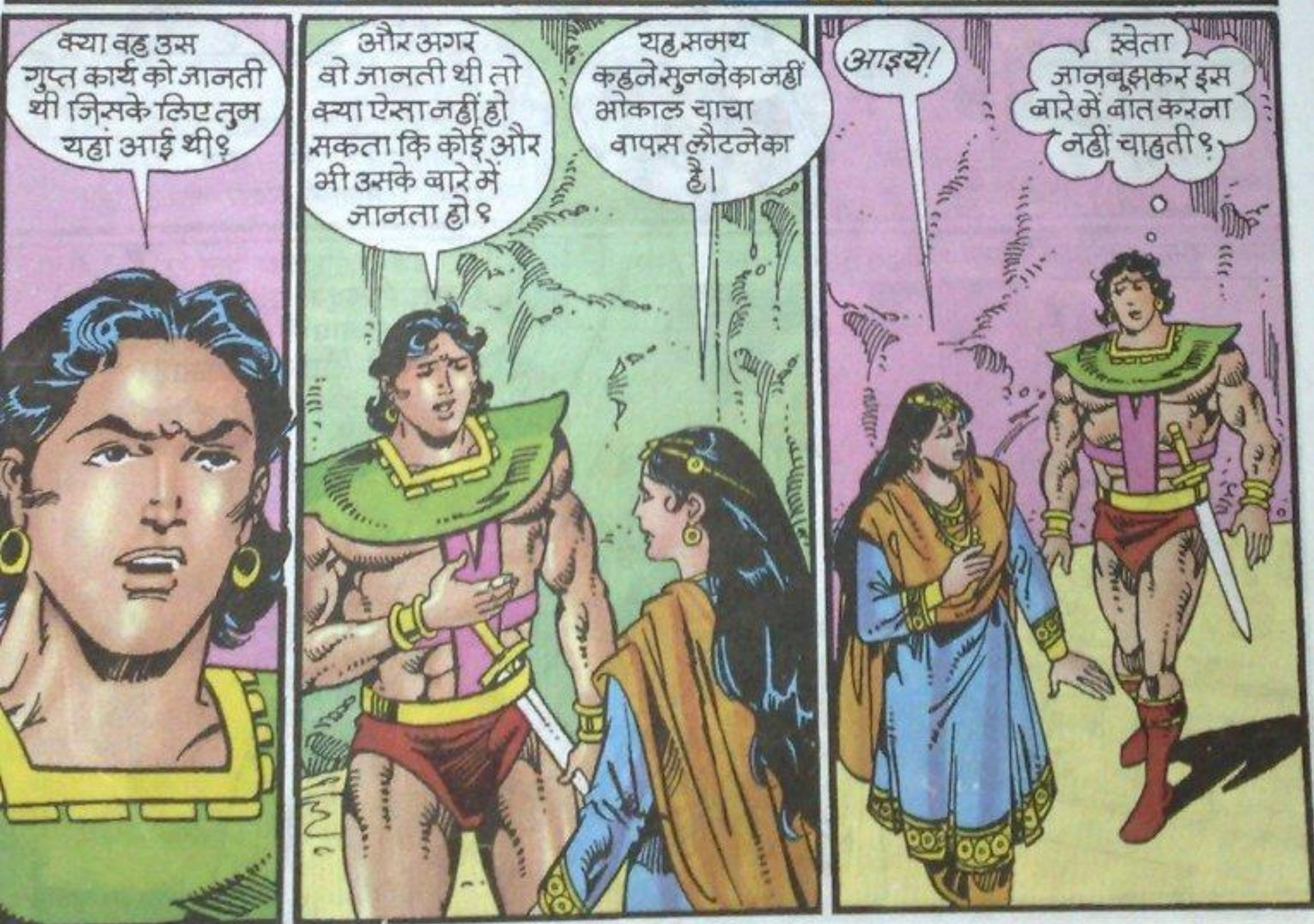
कऽऽक



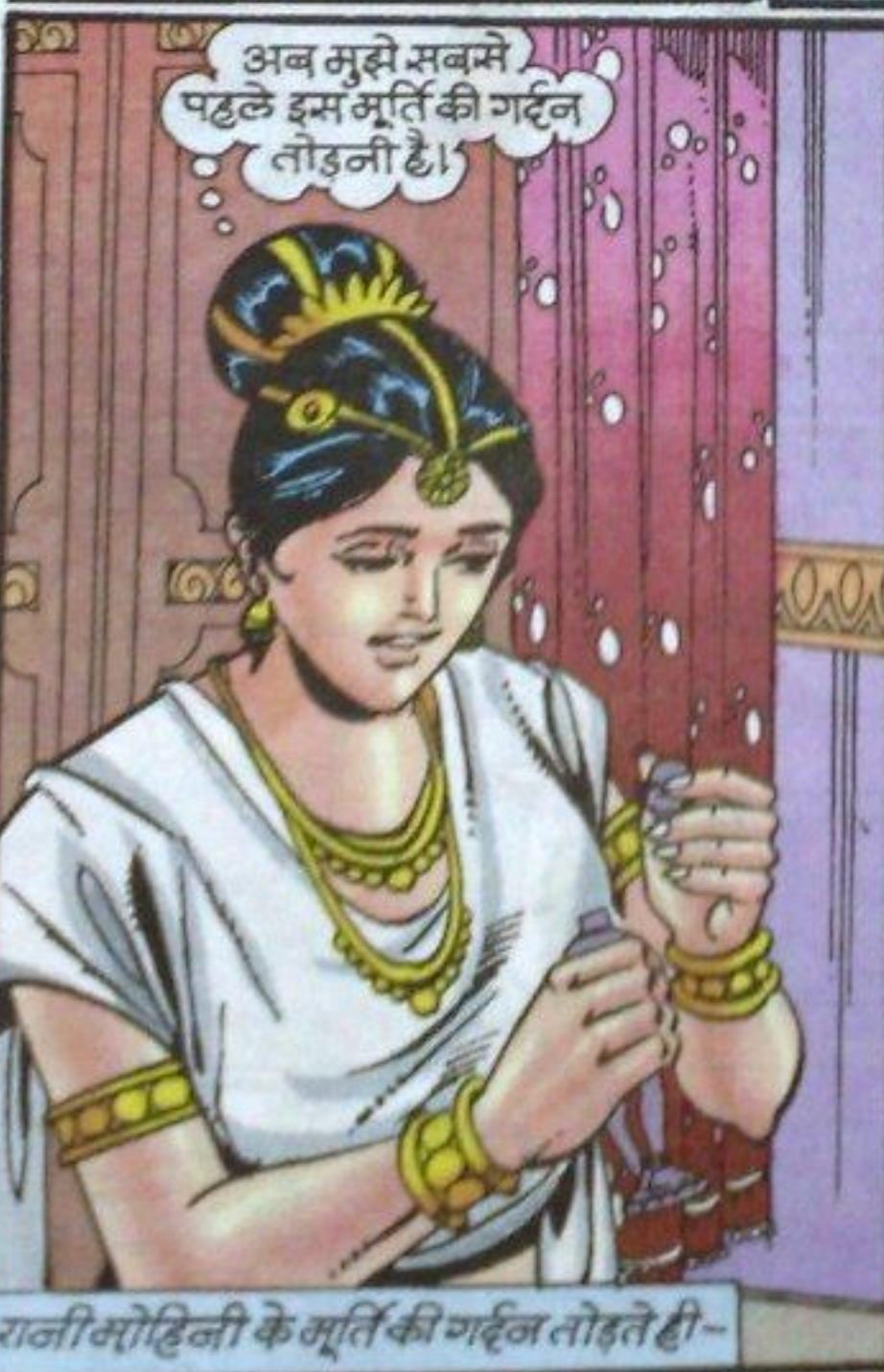
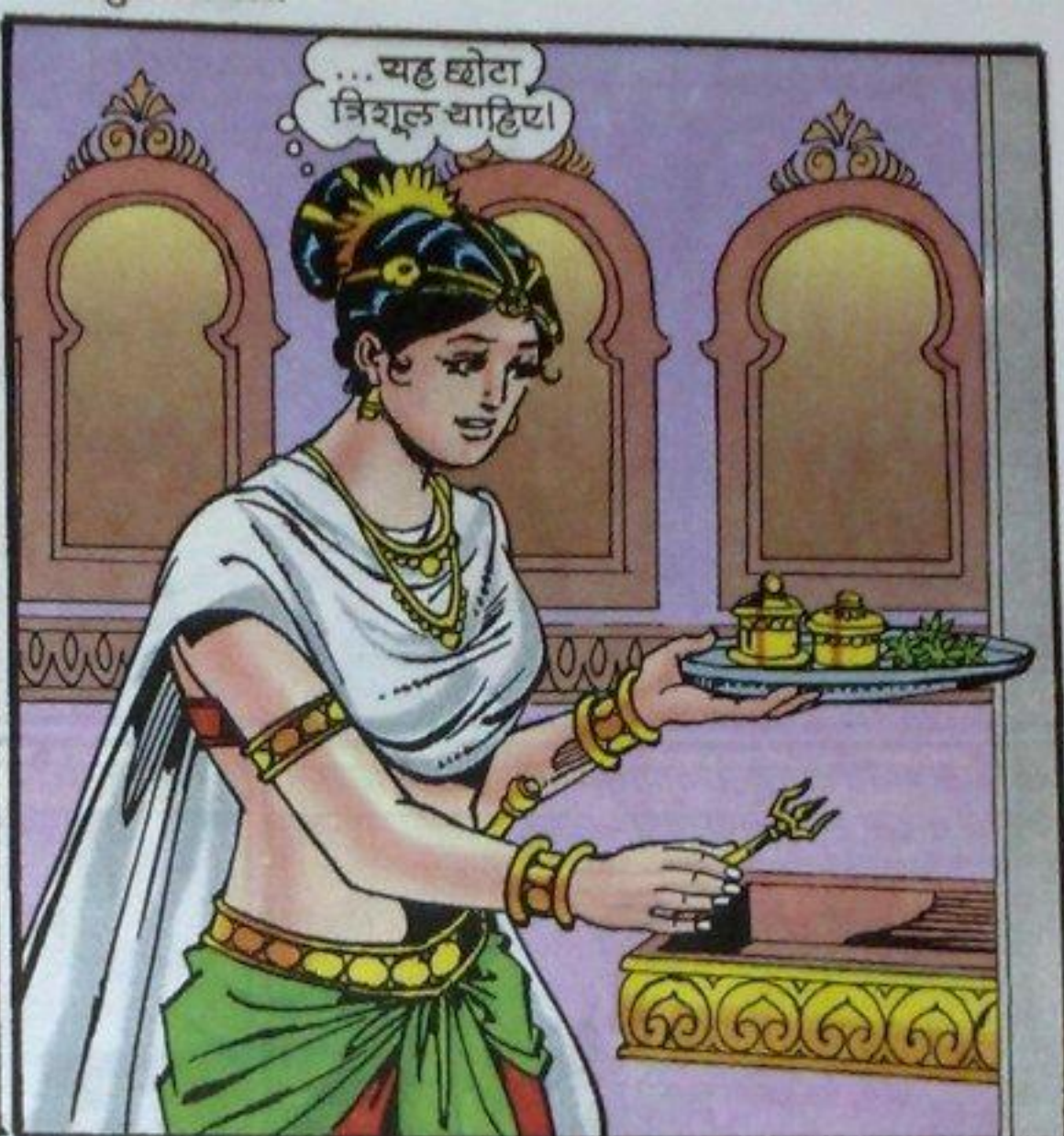
तेरे जैसी शैतानी शक्तियां
क्षण भर में ही ऐसे तहस नहस
हो जाती हैं।





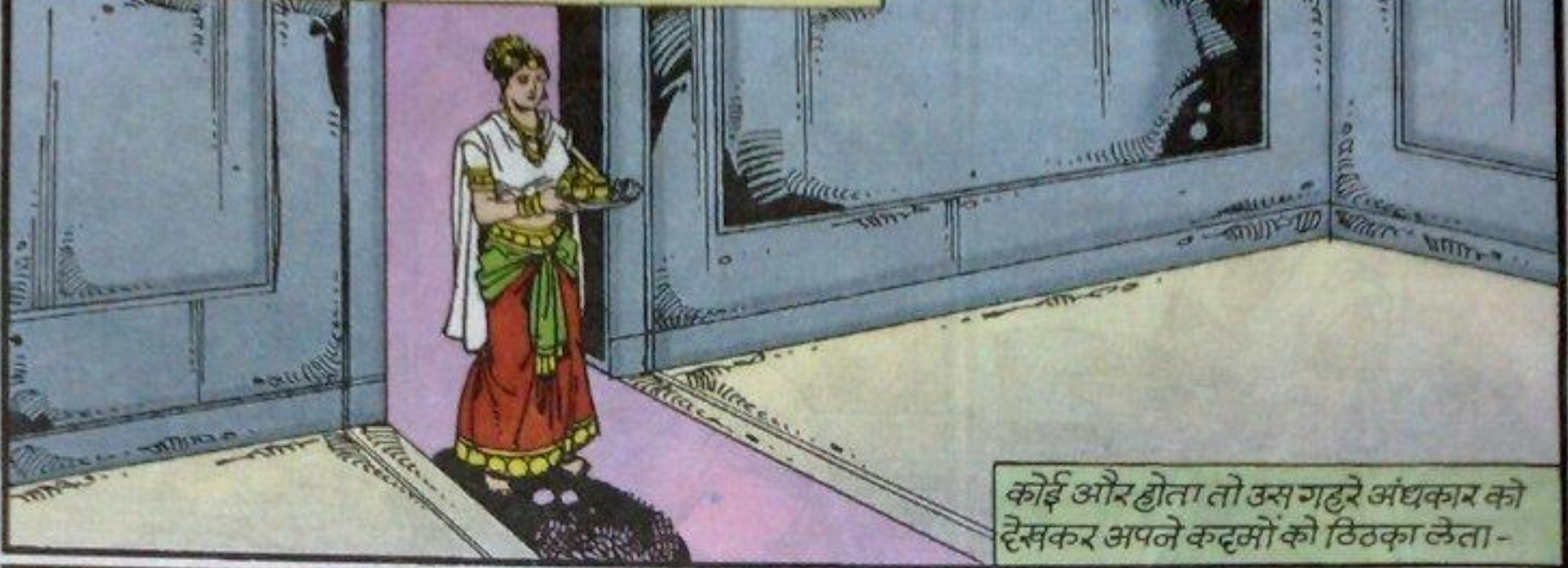






रानी मोहिनी के मूर्ति की गर्दन तोड़ते ही-

अब सामने गहरे अंधकार में भरा एक कमरा नजर आ रहा था।



कोई और होता तो उस गहरे अंधकार को देखकर अपने कदमों को ठिठका लेता -

लेकिन रानी मोहिनी जरा भी नहीं ठिठकी। उसने अपने कदम आगे बढ़ा दिये -



और जैसे ही रानी मोहिनी के कदमों ने उस अंधेरे कमरे के फर्श को छुआ -

वैसे ही वहां तेज प्रकाश फैल गया -



और उस प्रकाश में सामने मौजूद सीढ़ियां साफ नजर आ रही थीं -

रानी मोहिनी तेजी से सीढ़ियां उतरती चली गई -



क्योंकि सीढ़ियां जहां खत्म होती थी वहां चारों तरफ पानी ही पानी था -



लेकिन जल्दी ही रानी मोहिनी को रुक जाना पड़ना था -

और पानी में मौजूद थे भयानक भूखे मगरमच्छ-



लेकिन यह क्या इरानी मोहिनी को ना पानी की चिंता थी और ना उसमें मौजूद मगरमच्छों की-



उसने तो बेखटके पानी में पैर रख दिया-

इसी के साथ चमत्कार हो गया।

जिसके बीच में से होती रानी मोहिनी आराम से पानी को पार कर गई-



शीशे की उन दीवारों ने पानी को घेर लिया-

लेकिन क्या सामने रास्ता था-

नहीं था-



लेकिन बन गया जैसे ही रानी मोहिनी ने एक तरफ रखे ग्रंथ का पन्ना फाड़ा वैसे ही-



क्यों इ

अब रानी मोहिनी को आगे बढ़ते ही सामने हुवा में लटका एक छेद नजर आया-



और उस ताले की चाबी रानी मोहिनी के हाथ में थी-

उस छोटे से त्रिशूल के रूप में-



जिसके ताले के छेद में घुसते ही-



वहां निश्चय ही किसी ताले का छेद था-

सामने जो प्रकट हुआ वह मानो जादू के बल पर प्रकट हुआ-

विकासनगर का स्वजाना
मेरे सामने है। मुझे उसके द्वार में
प्रवेश करके लक्ष्मी पूजन की प्रक्रिया
सम्पन्न करनी चाहिए।...

ताकि इस स्वजाने
का धन और इसकी समृद्धि
और भी अधिक...



... बढे!
ओह!

विकासनगर का स्वजाना
जितना बढना था उतना बढ चुका
है। अब तो इसके खाली होने
का समय है।...

... क्योंकि
इस स्वजाने को खाली
करने तुम्हारे पीछे
पीछे यहां तक आ
पहुंचा है।...



लुटेरा
पठसर्पा!

ओह! तुझे अवश्य
ही राज्य के किसी शत्रु ने
यहां भेजा है।



परन्तु मेरे होते उस
दुष्ट का खजाना लूटने का
उद्देश्य सफल नहीं हो
सकता।

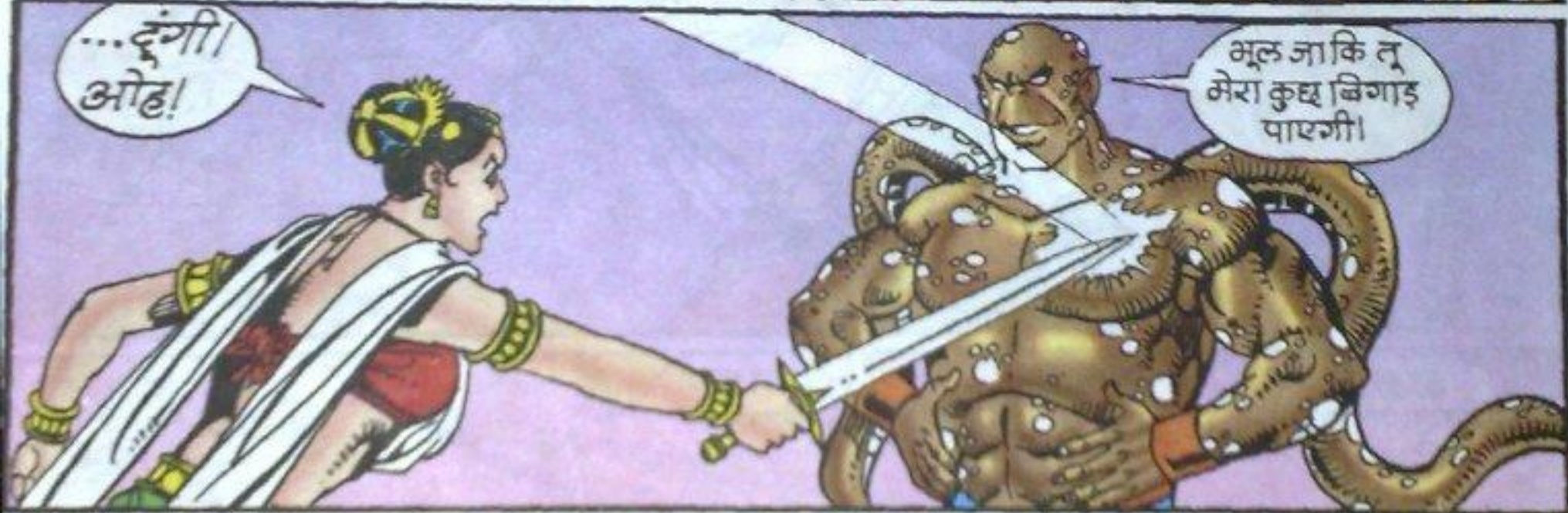


मैं तुझे
काटकर फेंक...



...दुंगी!
ओह!

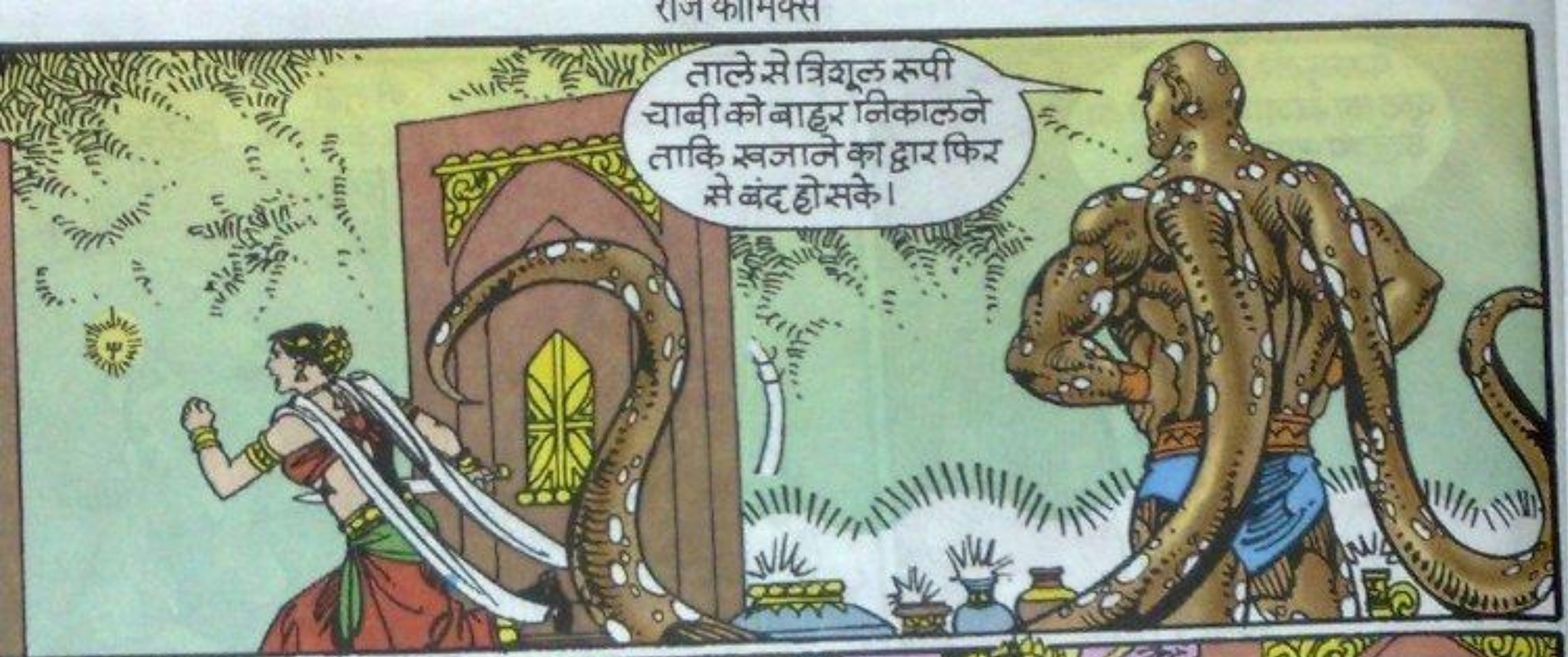
भूल जा कि तू
मेरा कुछ बिगाड़
पाएगी।

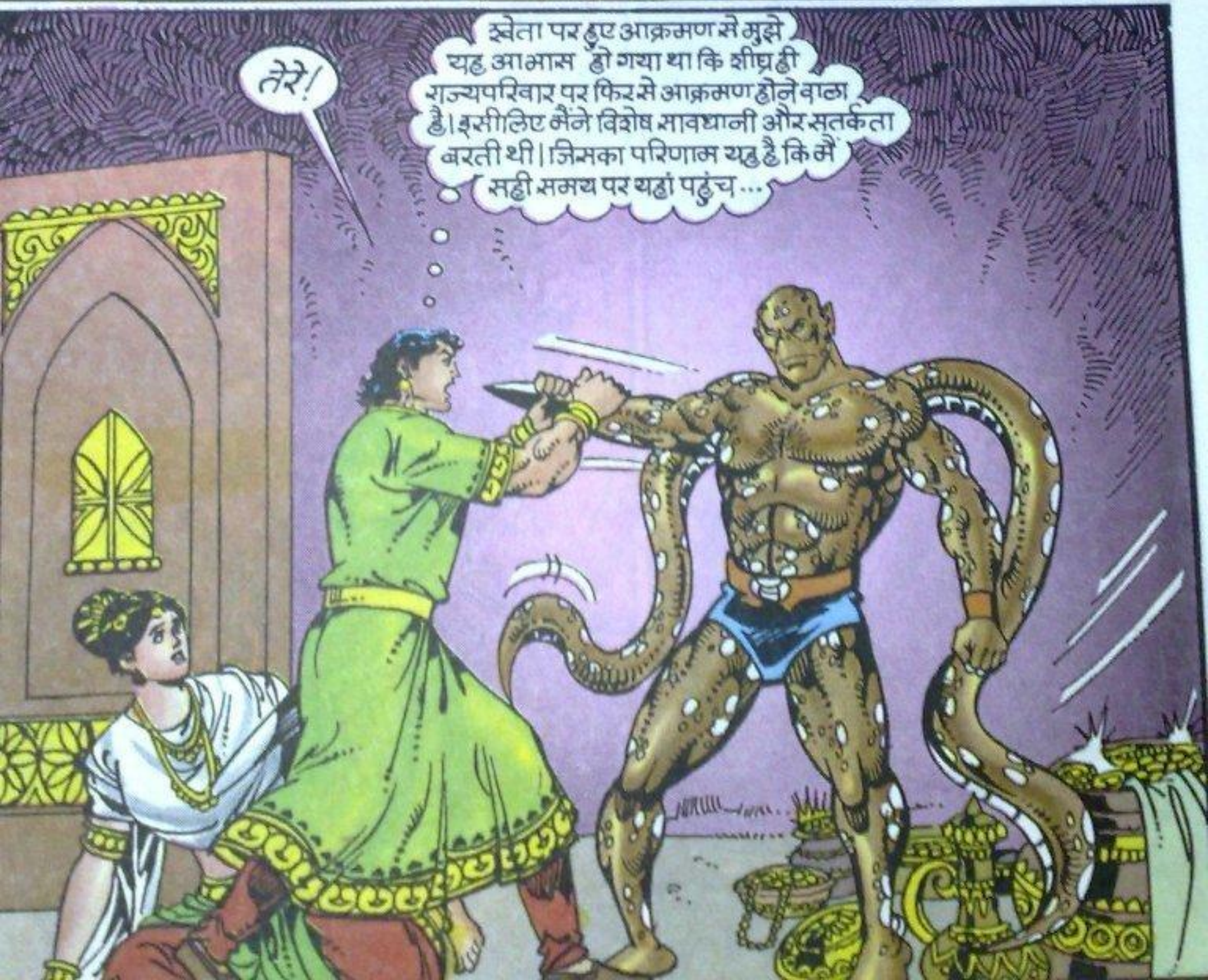


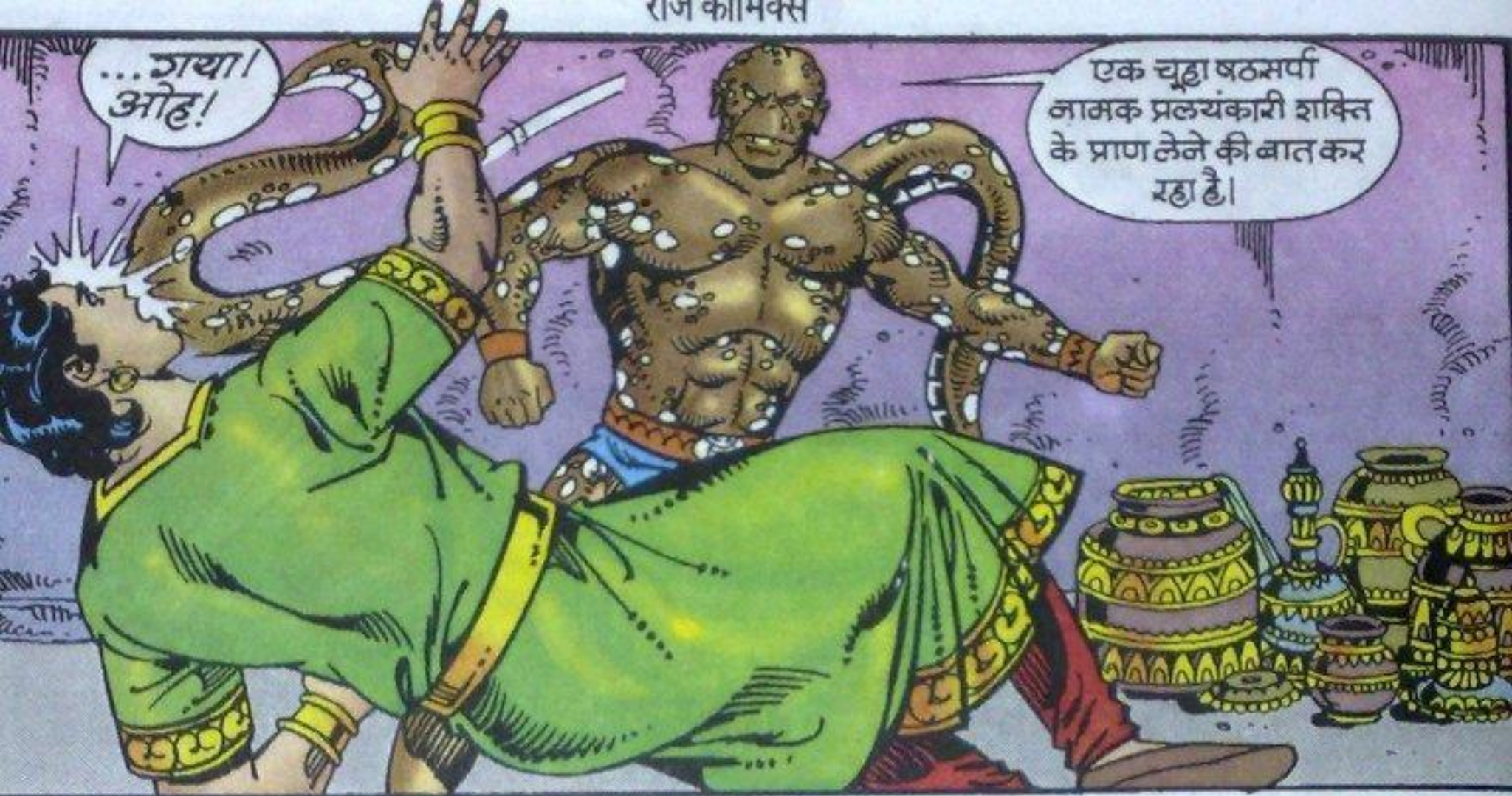
खजाना तो
मैं तुझे लूटने नहीं
दुंगी।

भाग रही है। मैं
जानता हूँ तू किधर भाग
रही है।









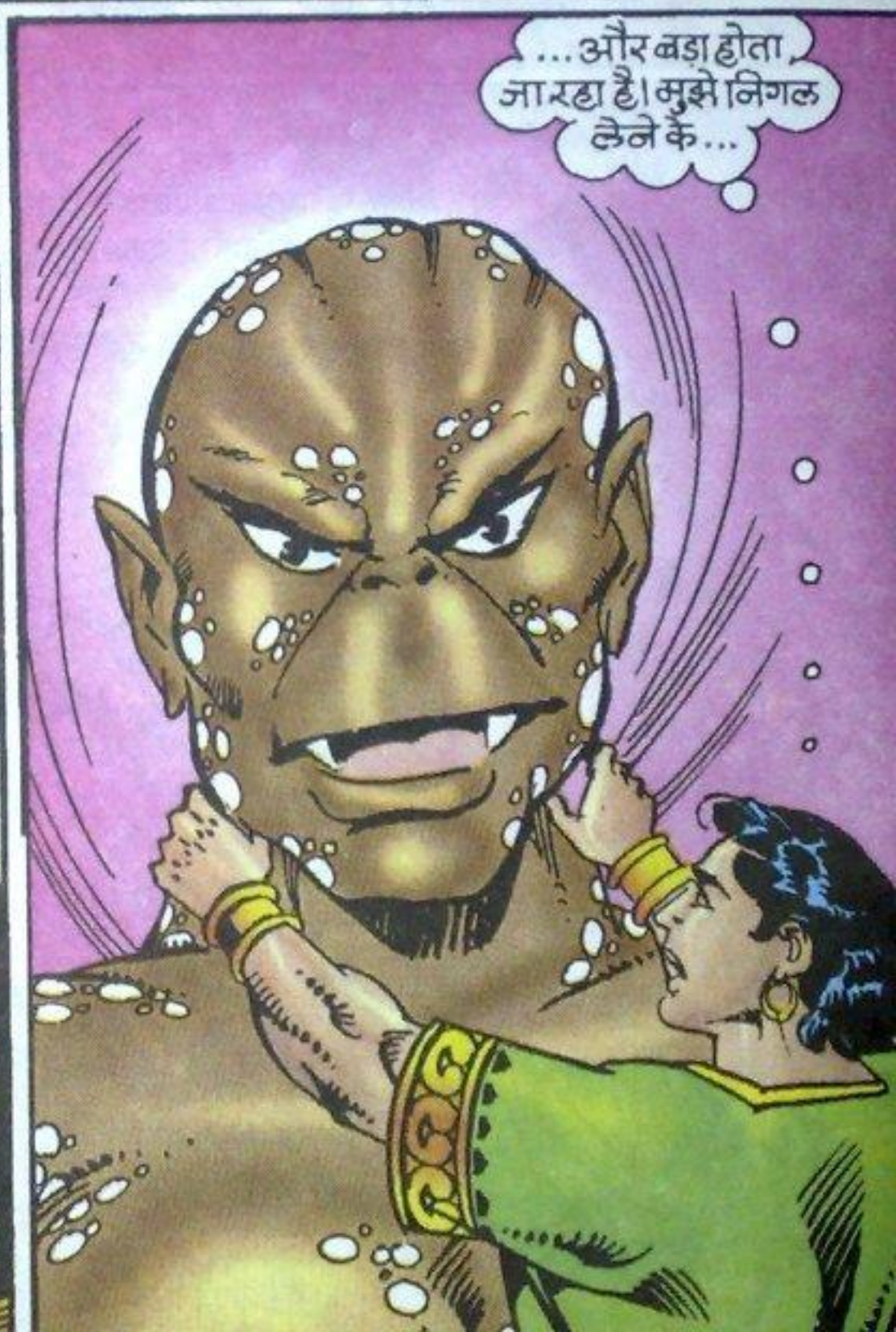
...जाया!
ओह!

एक चूहा षठसर्प
नामक प्रलयकारी शक्ति
के प्राण लेने की बात कर
रहा है।

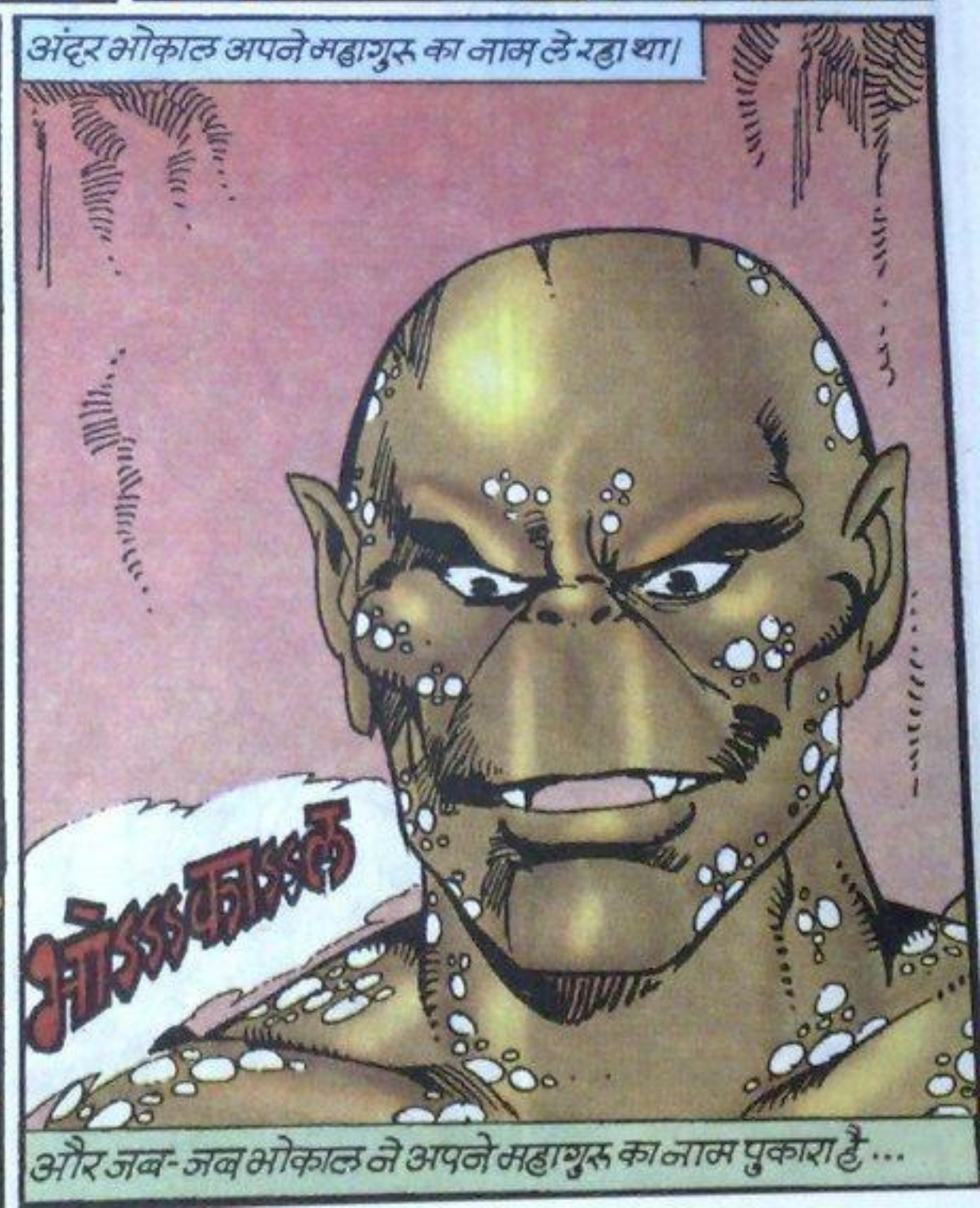
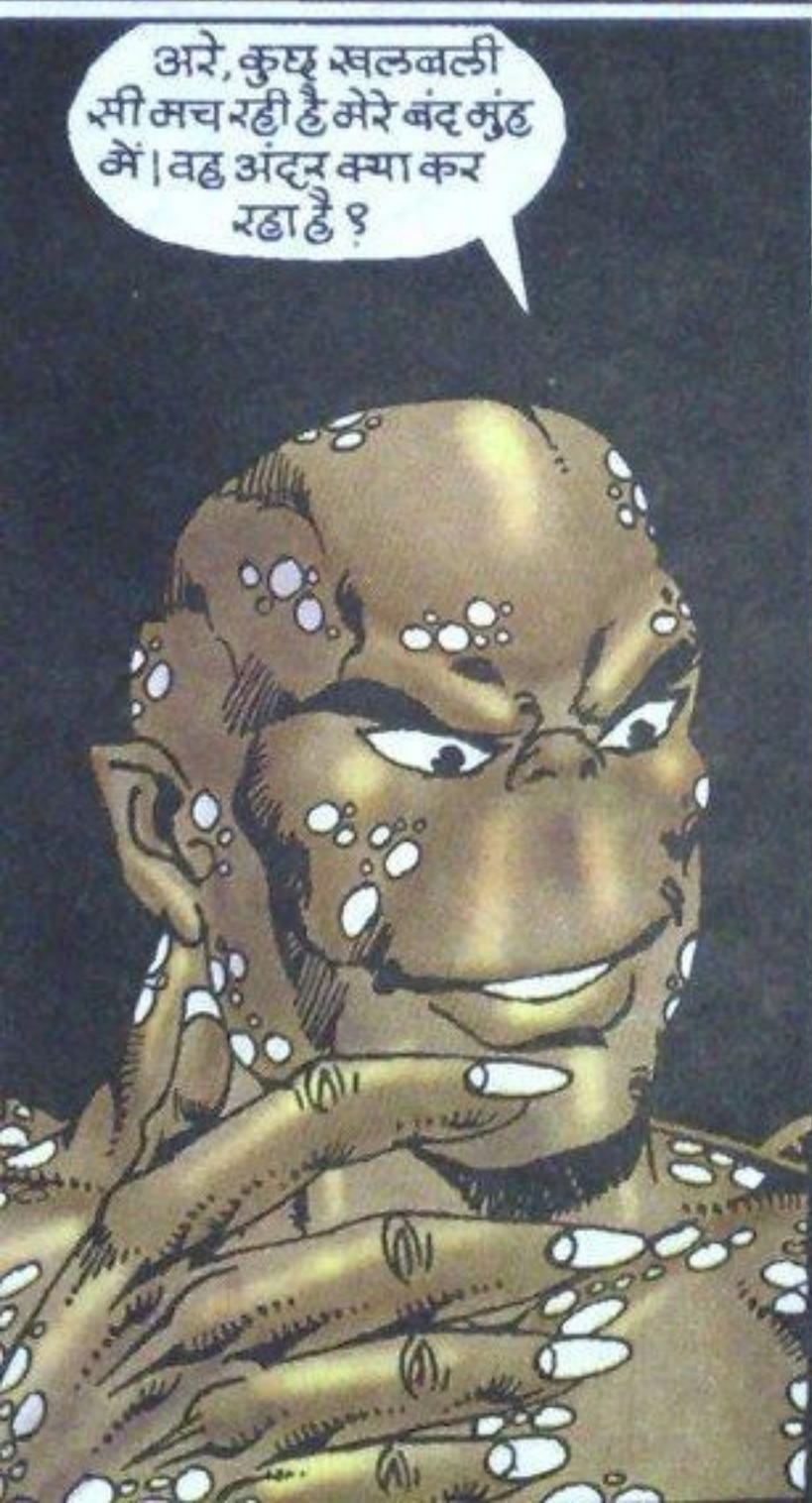
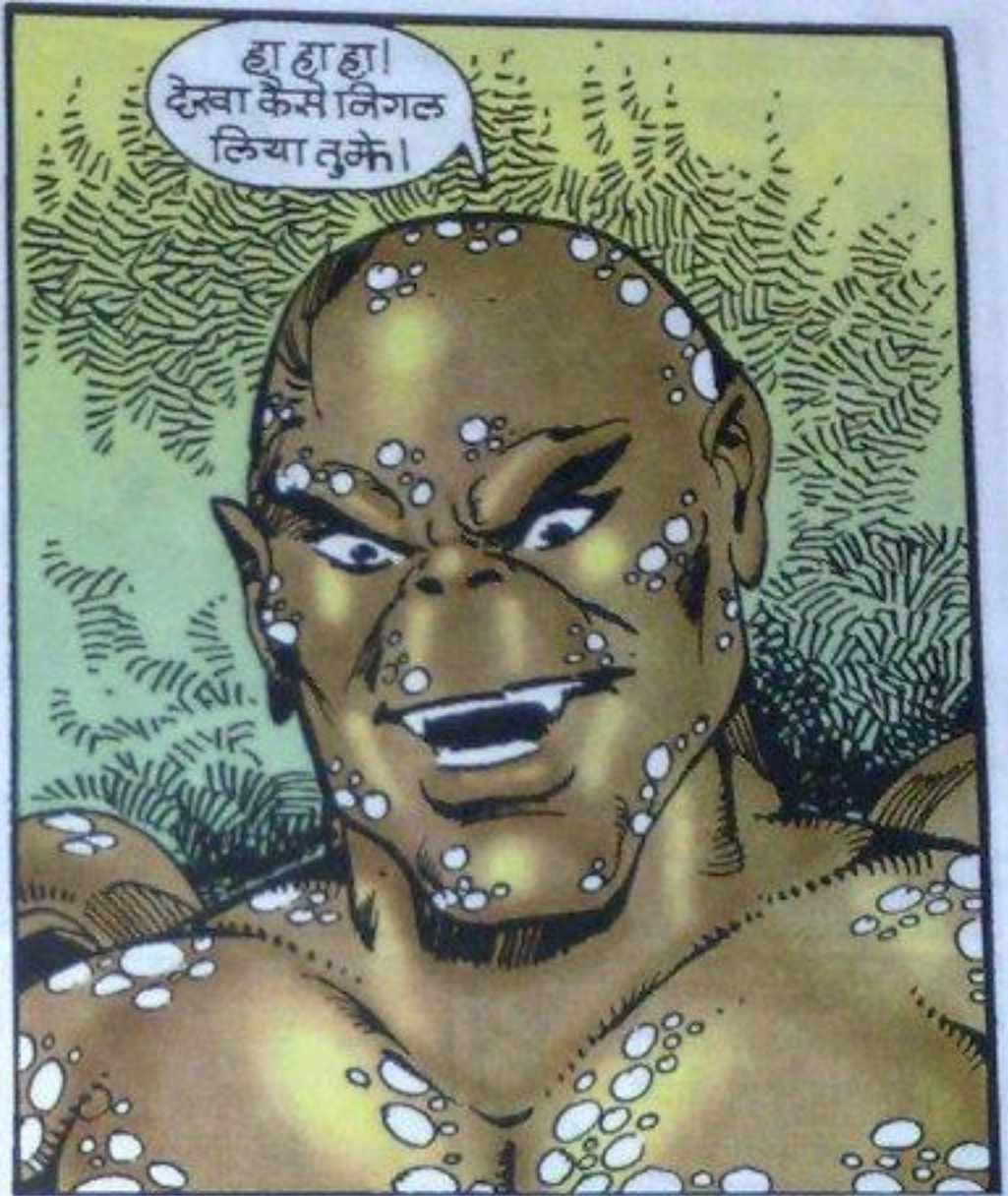
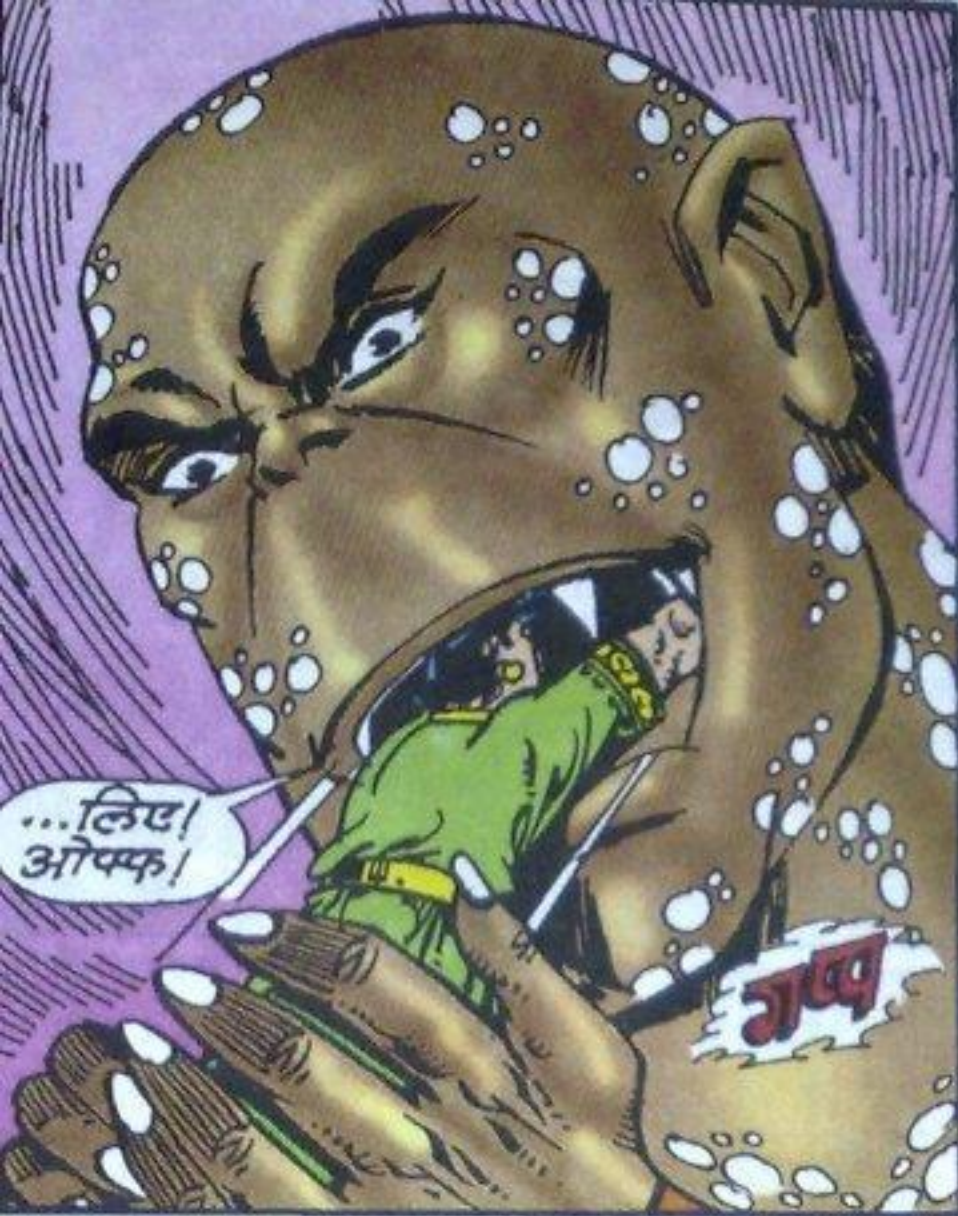


तुझे तो मैं
कच्चा ही निगल
जाऊंगा।

ओह!
षठसर्प का यह
मुख तो बड़ा...



...और बड़ा होता
जा रहा है। मुझे निगल
लेने के...



तब-तब उसके दूर बंधनों की झलियाँ उड़ गईं।



महाकली भोक्तृ के वारों से उसकी चरिया भी, तड़पा भी और

...तिलमिलाया मी-

मैं तुझे
छोड़ूंगा नहीं।

और मैं तुझे
खजाने को नहीं लूटने
दूंगा।

खजाना तो
मैं लूटकर ही जाऊंगा
क्योंकि मैं ऐसा करने
यहां अकेला नहीं
आया हूं।

अपनी पूरी सेना
साथ लाया हूं।

ओह! नहीं! ये
उसके शरीर से क्या
निकल रहा है?

मेरी सेना के सिपाही
मेरे ही जैसे। अब रोक किस
किसको रोकेंगा।

ओह!

षठसर्प के सभी रूप भोका ल पर दृष्ट पड़े-

हाहाहा!

ओप्फ! मैं षठसर्प
को रोकने के लिए उसकी
तरफ नहीं बढ़ सकता
क्योंकि...

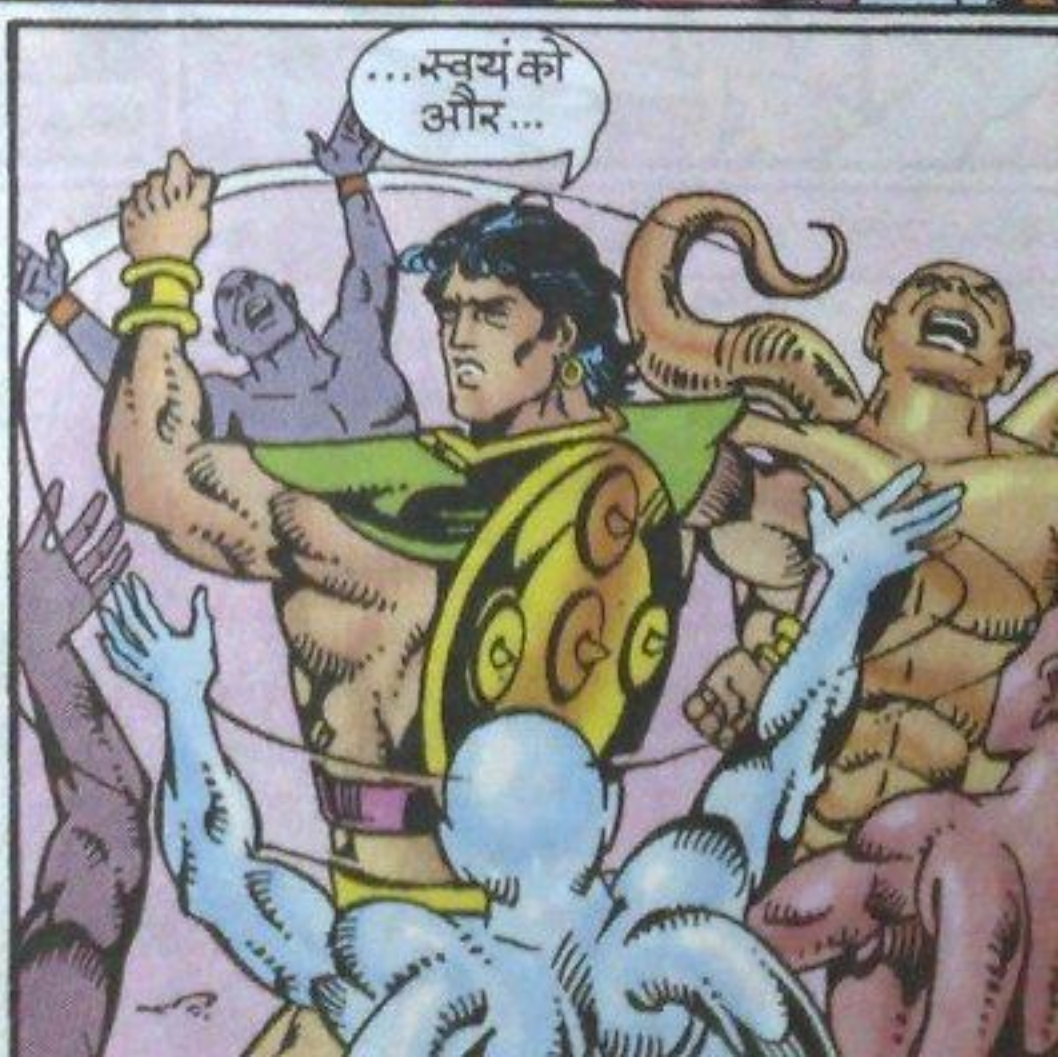
...मैं बुरी तरह
फंसा हुआ हूँ।



भोकाल की दुविधा को रानी मोहिनी ने सूब समझा-

षष्ठ सर्प को रोकने
का अब एक ही रास्ता है भोकाल,
हवा में स्थित उस ताले से त्रिशूल रूपी
चाबी बाहर निकाल लो। स्वजाना
अवृक्ष्य हो जाएगा।

परन्तु क्या तुम
ऐसा कर सकोगे
महाबली ?



विकासनगर के
स्वजाने को बठसर्पों के
हाथों से लुटने से...



...बचाना
है तो।



और दूसरे ही क्षण-



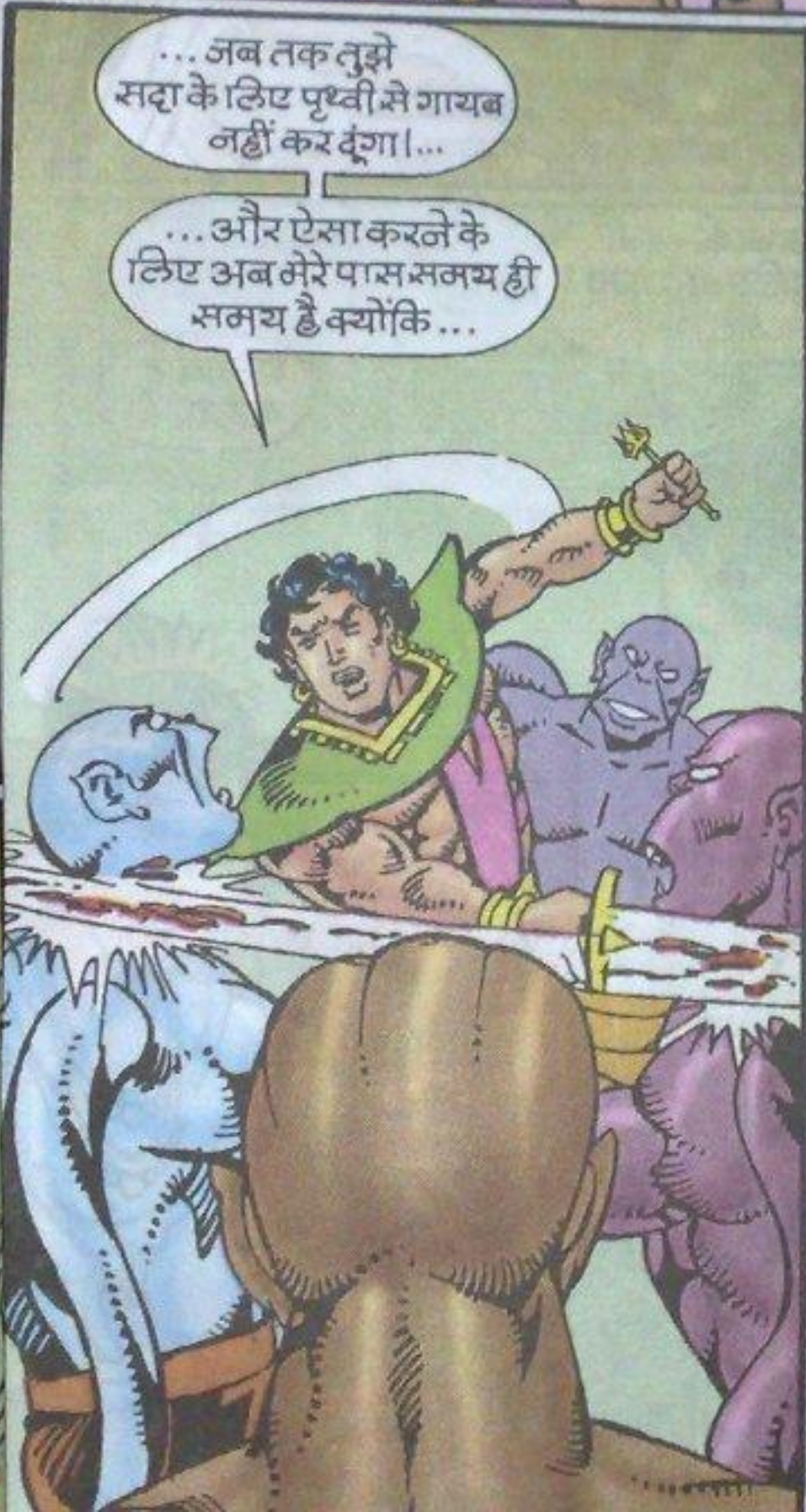
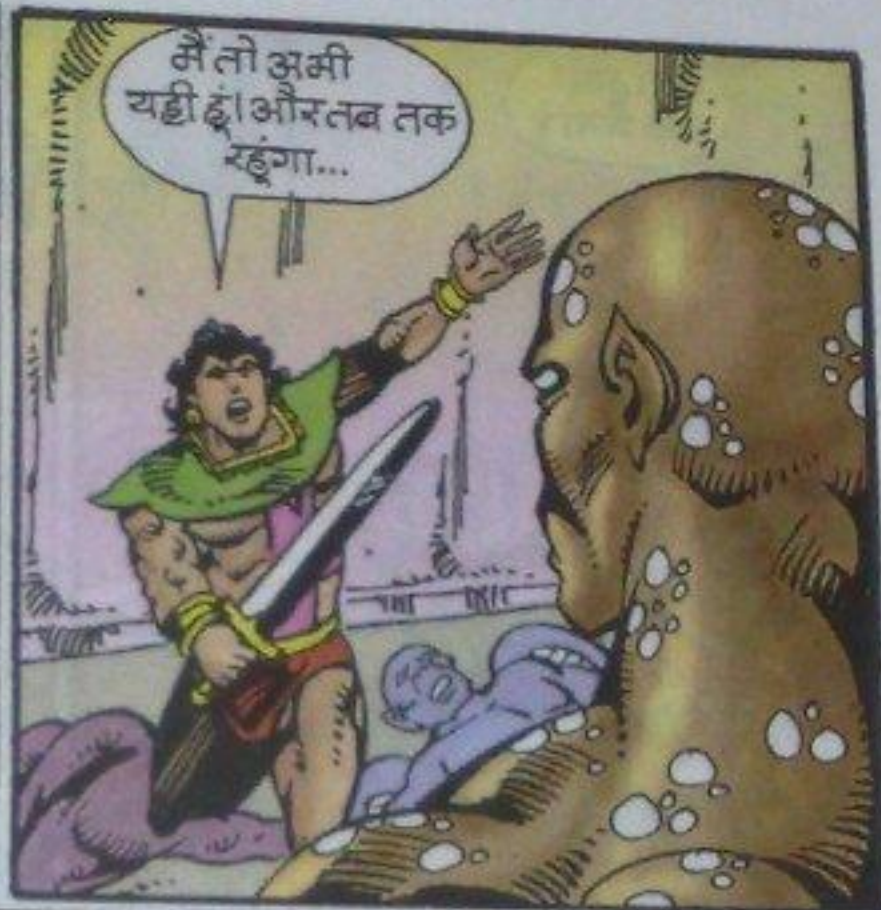
एक झटके के साथ ही चाबी भोकाळ के हाथ में थी।

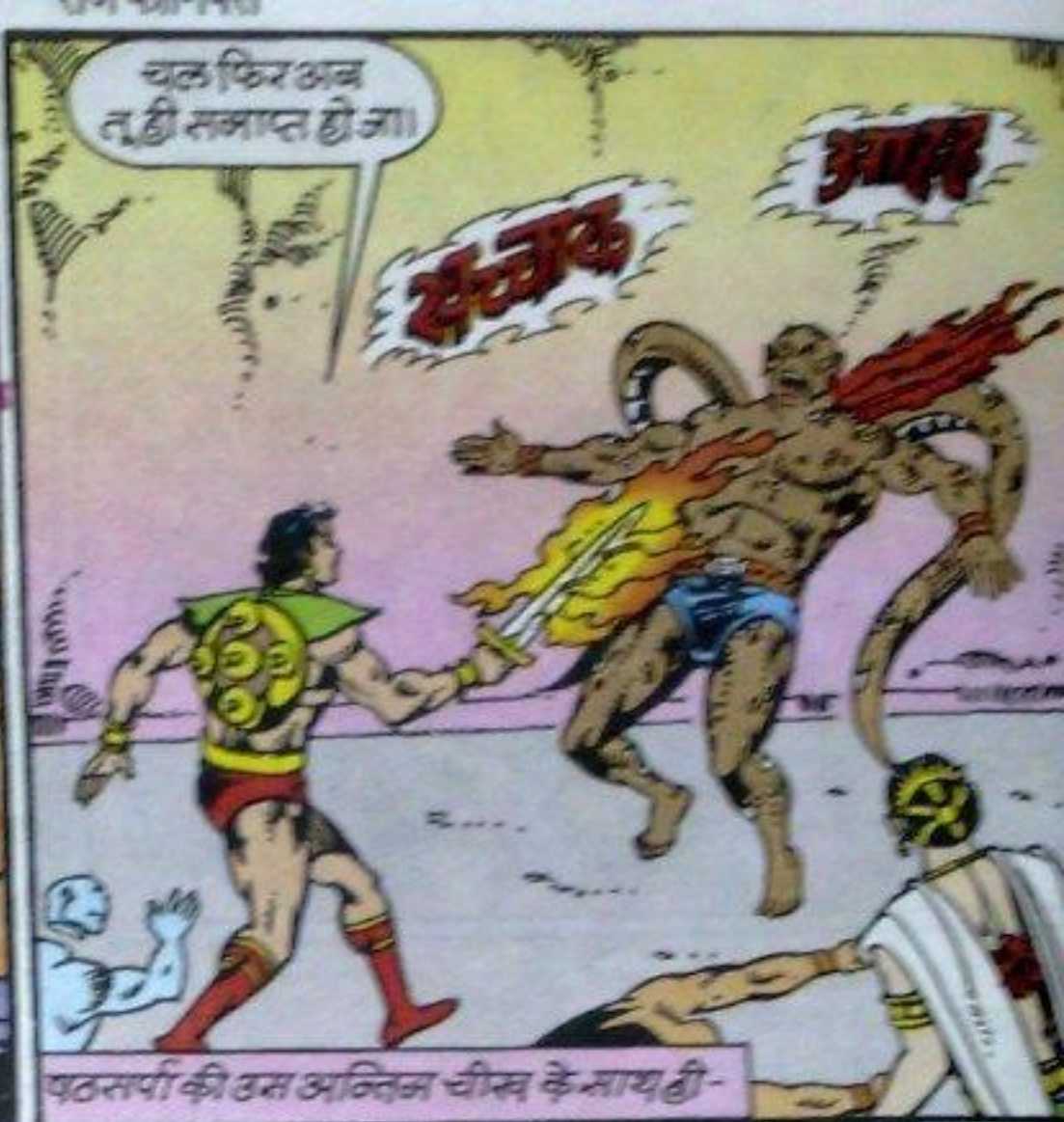
और अगले ही क्षण-



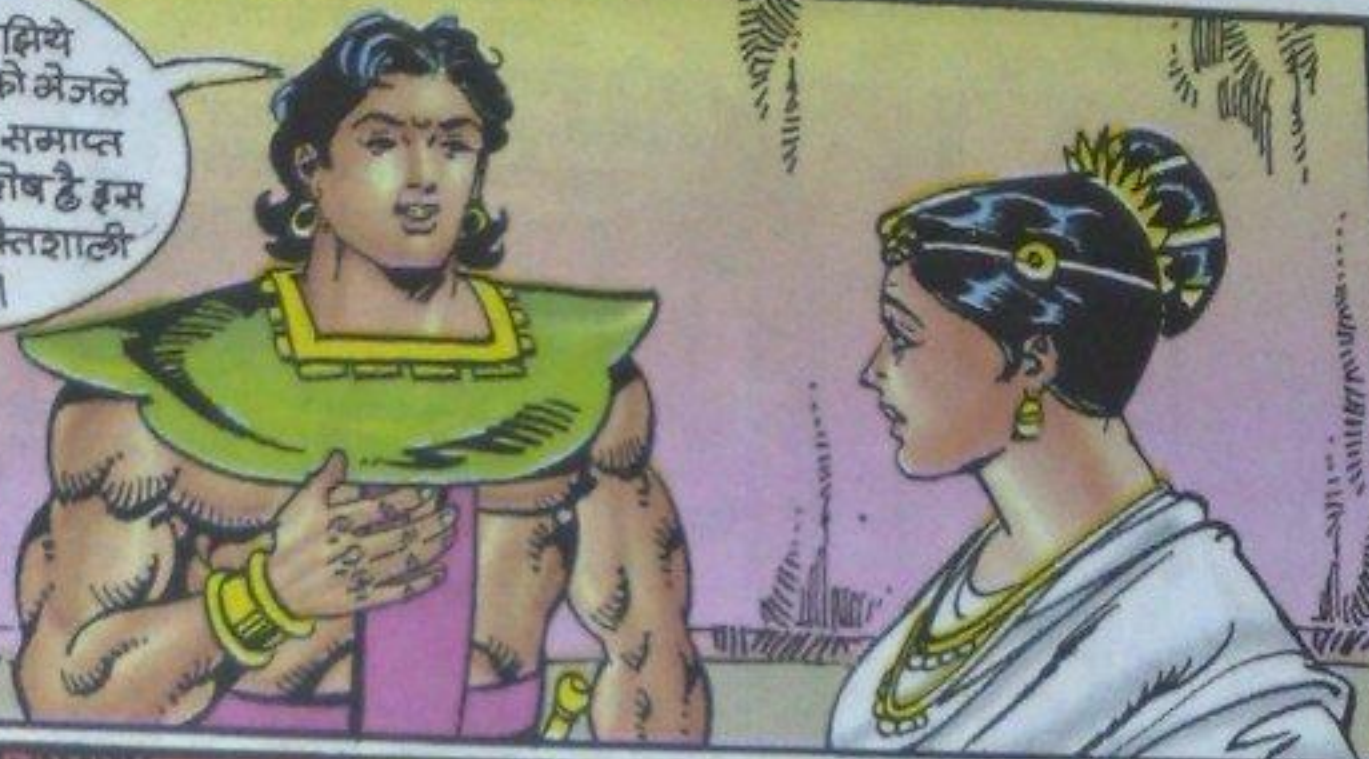
ओह! नहीं
स्वजाना तो गायब
हो रहा है।

भड़क





अभी भी आप इस
खजाने को सुरक्षित मत समझिये
क्योंकि शीतला और घठसर्प को मरे जाने
वाले तक पहुंचकर मुझे उसे भी समाप्त
करना होगा और ऐसा क्या विशेष है इस
खजाने में जिसके लिए हो शक्तिशाली
आक्रमण कराए गए।



व... वो खजाने
में और क्या होता है। धन-
दौलत, जेवर आभूषण।... ये...
यही सब हमारे खजाने
में भी है।



आओ वापस
चले।

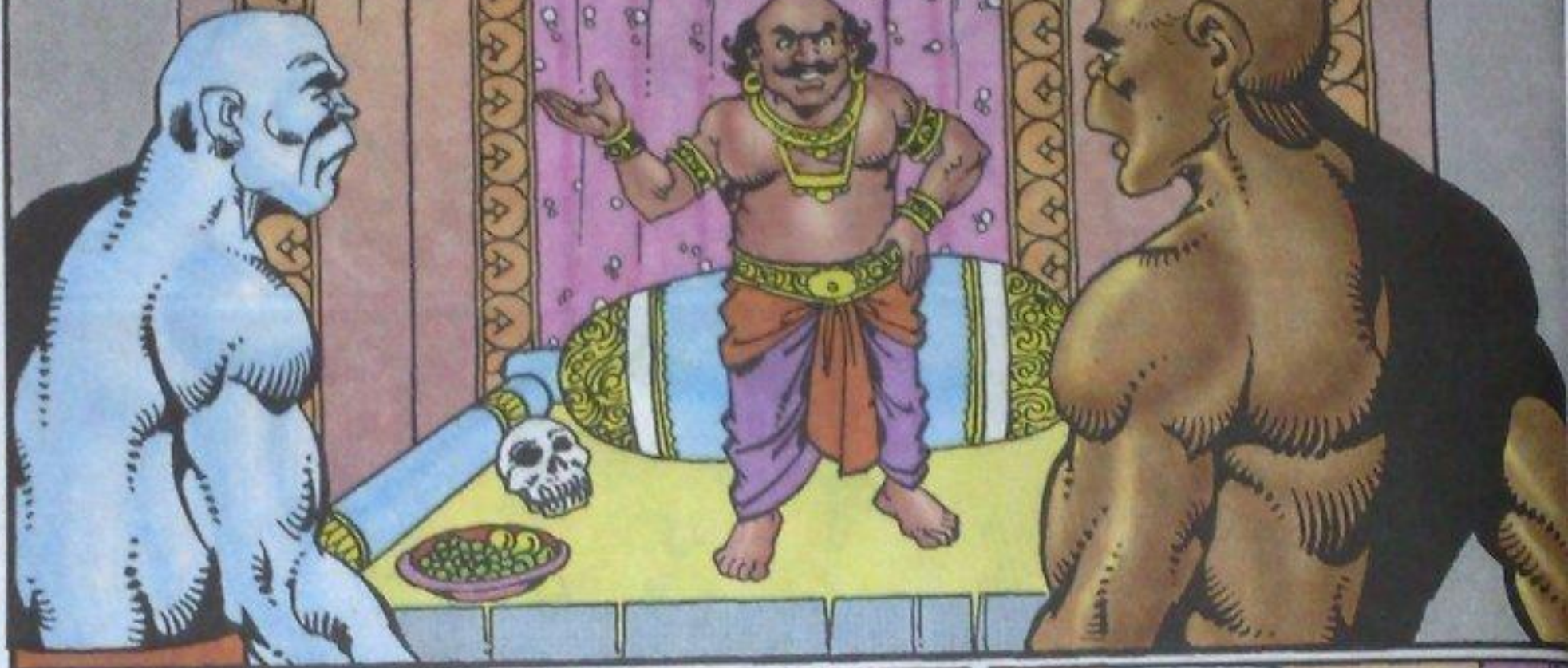
जैसी आपकी
आज्ञा महारानी।

महारानी
जी मुझसे कुछ छिपा
रही है।



लेकिन उससे कुछ नहीं हुआ था-

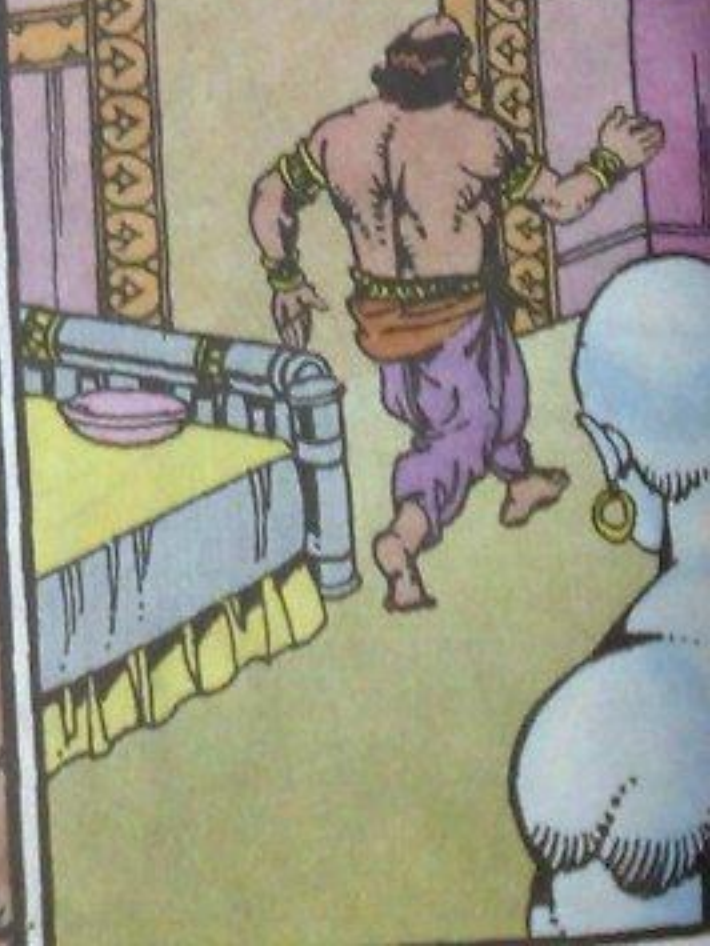
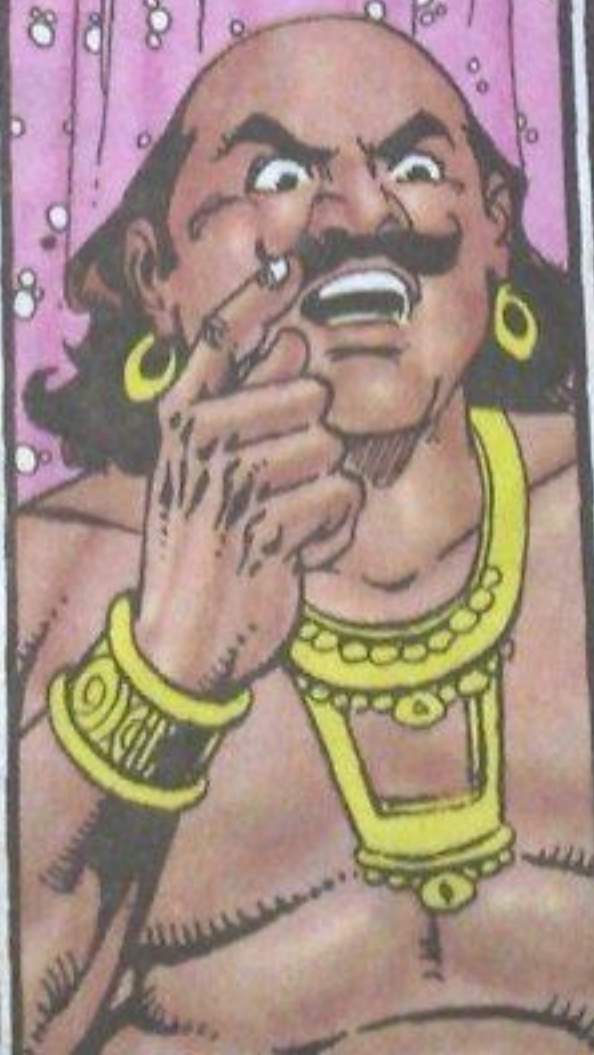
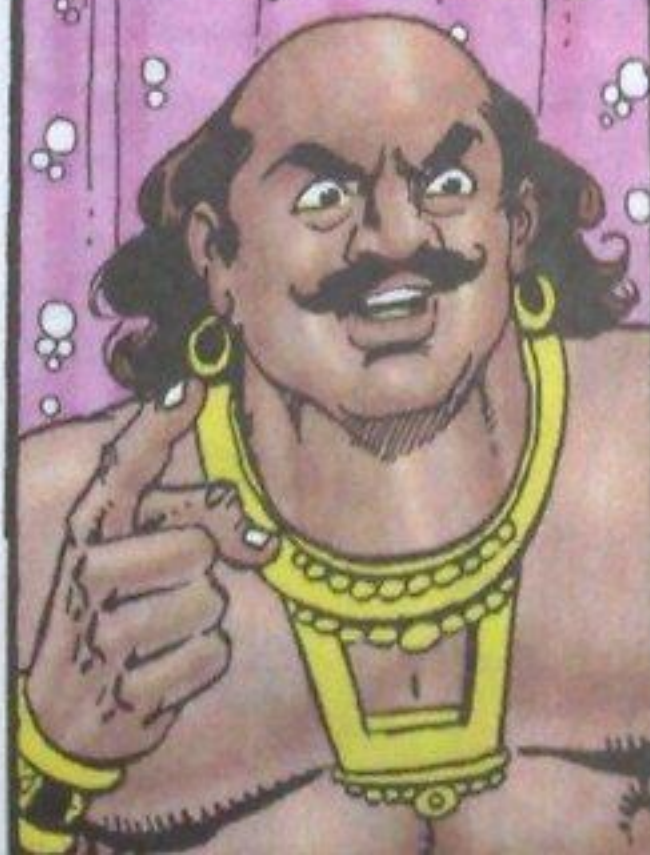
ओप्फ! कई वर्ष के परिश्रम और गुप्तचरी को भोका ल ने बरबाद कर दिया। अब मुझे नहीं लगता कि ये काम फिर हो पाएगा क्योंकि...

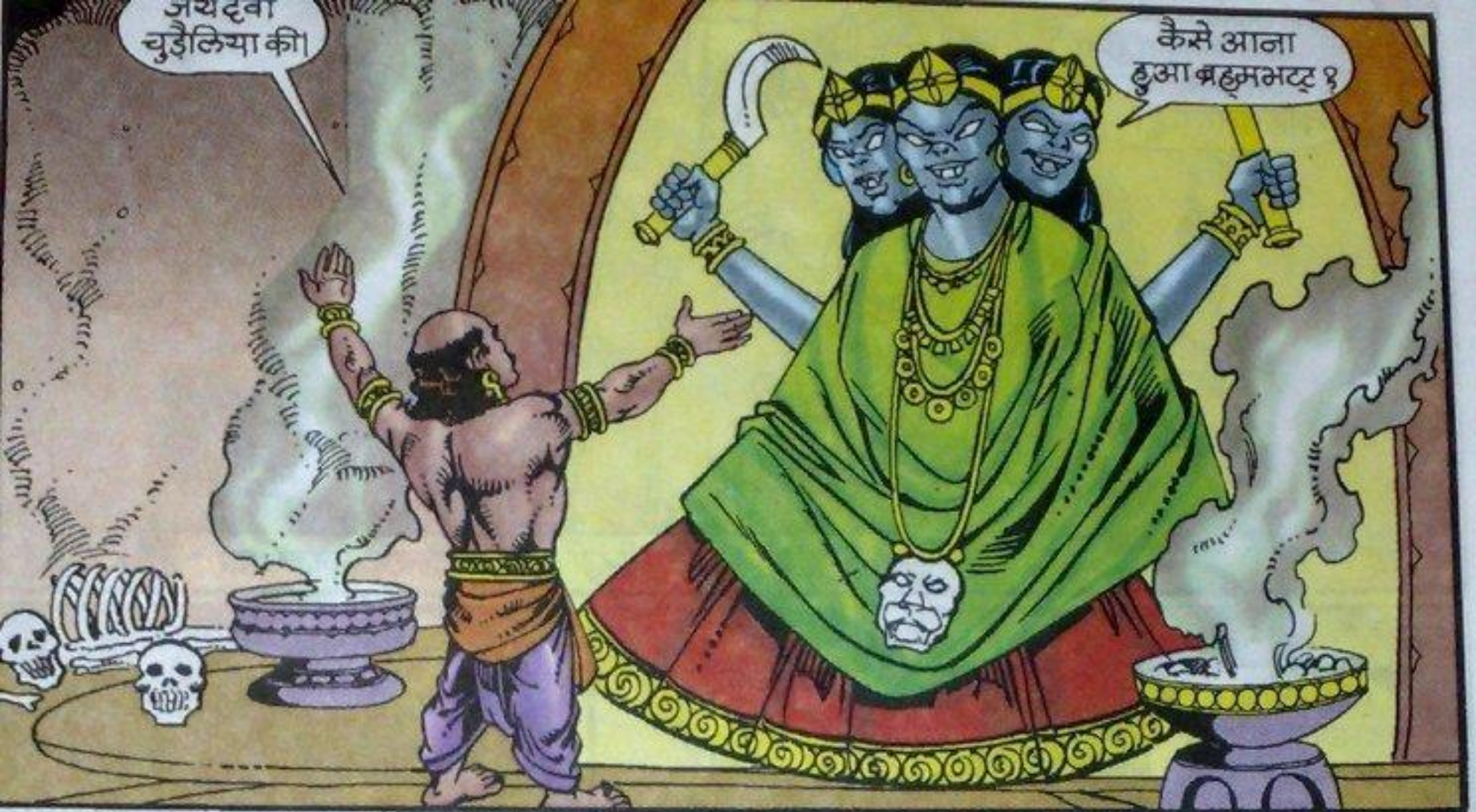


आज की रात यानी दिवाली की रात समाप्त होने को अग्रसर है। और एक बार यह रात समाप्त हो गई तो फिर मुझे एक वर्ष और प्रतीक्षा करनी होगी।

नहीं! मुझे वह खजाना आज ही चाहिए।

और ऐसा कैसे होगा ये मुझे शैतान देवी चुड़ैलिया बताएगी।





उस असंभव को
तुम्हें संभव बनाना होगा
और ऐसा कैसे होगा ये मैं
तुम्हें बताती हूँ।



देवी चुड़ैलियां बताती रही और ब्रह्ममूढ़ सुनता रहा।

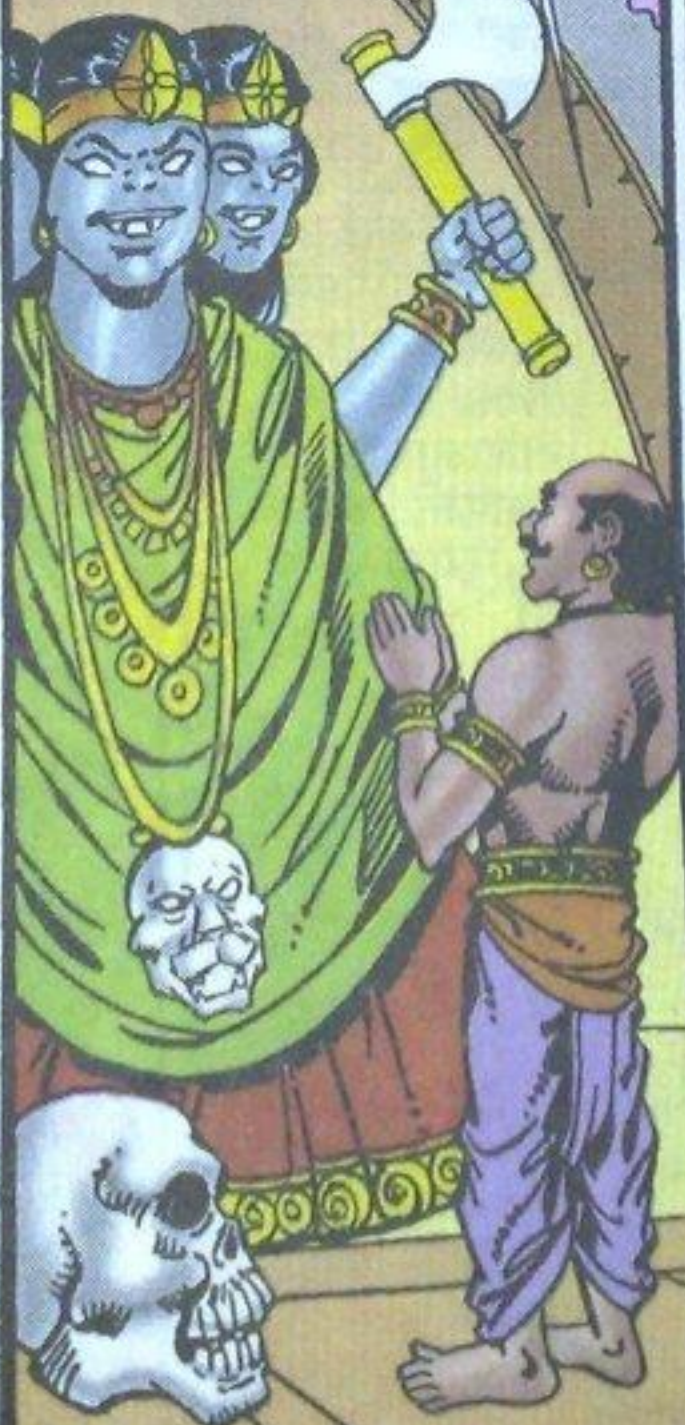
जल्दी ही-

वाह! देवी वाह!
क्या उपाय बताया
है आपने। मैं धन्य
हुआ।

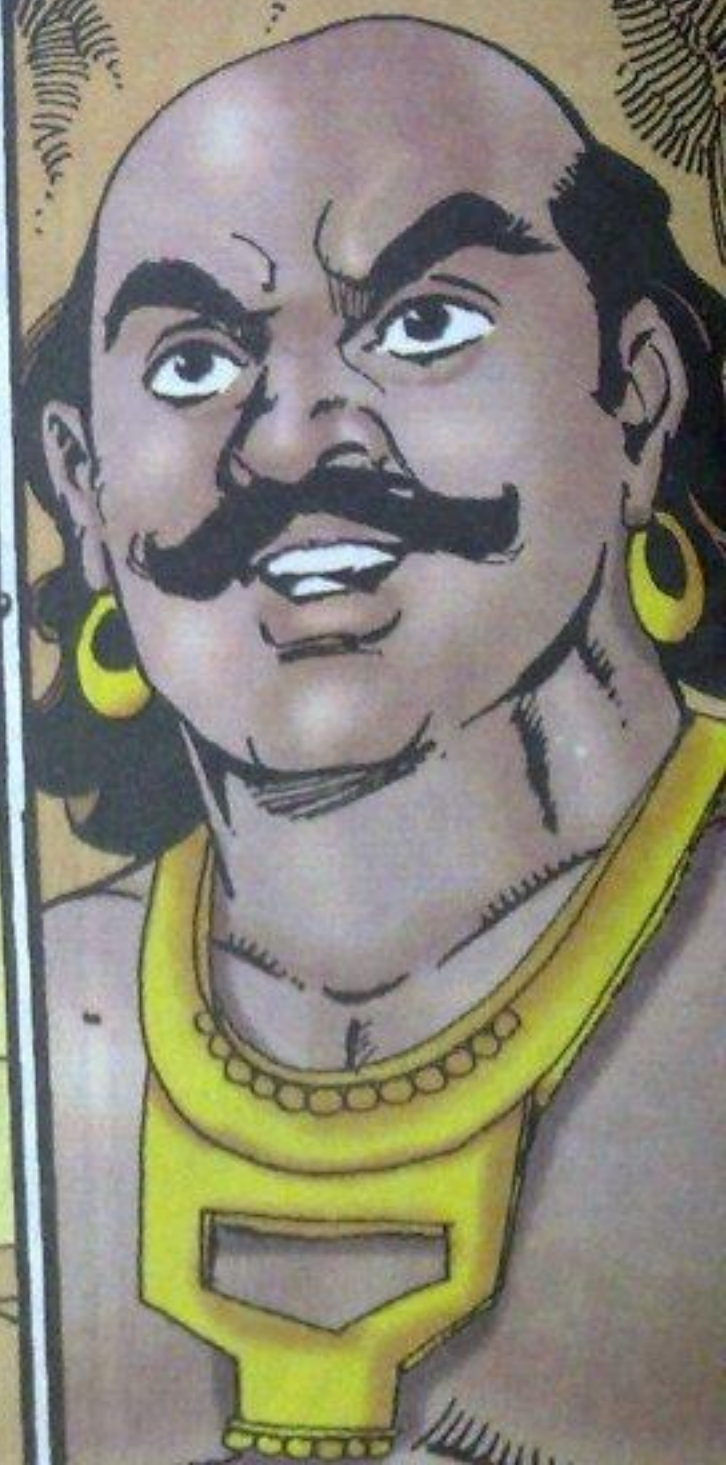
मैं धन्य
हुआ।



अब मुझे जाने
की आज्ञा दीजिए क्योंकि
रात्रि बहुत कम है
और...



... काम बहुत
अधिक।



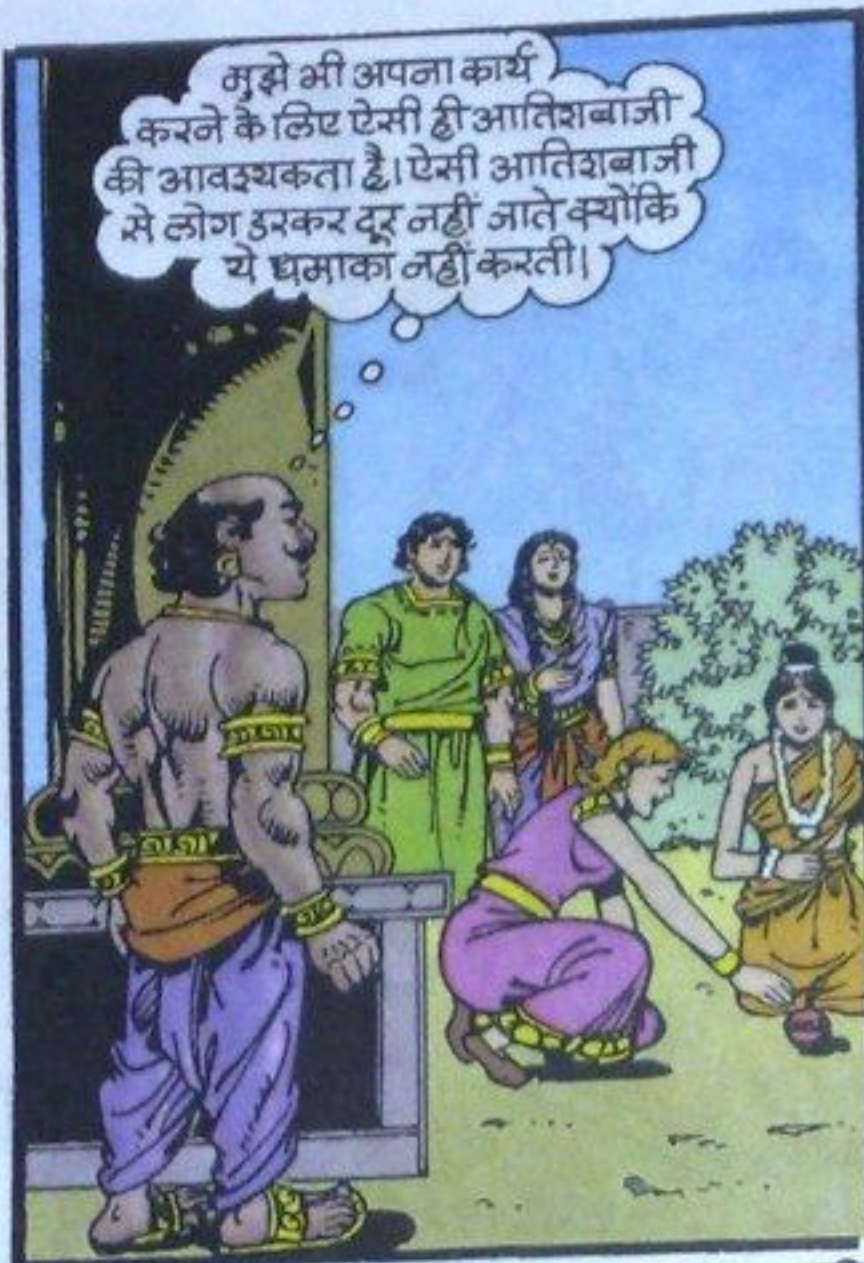
ओकल भी दिवाली की उस रात्रि का भरपूर आनन्द उठा रहा था-

पूजा हो गई।
आइये अब आतिशबाजी
का आनन्द लेते हैं।

ध्यान से सलोनी
कहीं अपना हाथ मत
जला बैठना।

मुझे तो ध्वनि करने
वाली नहीं रंग-बिरंगी रोशनी
करने वाली आतिशबाजियों
में आनन्द आता है।

जैसे यह
अनार।



और कब वहां फैला घुआ आश्चर्यजनक रूप से सभी को अपनी जकड़ में लेता चला गया—

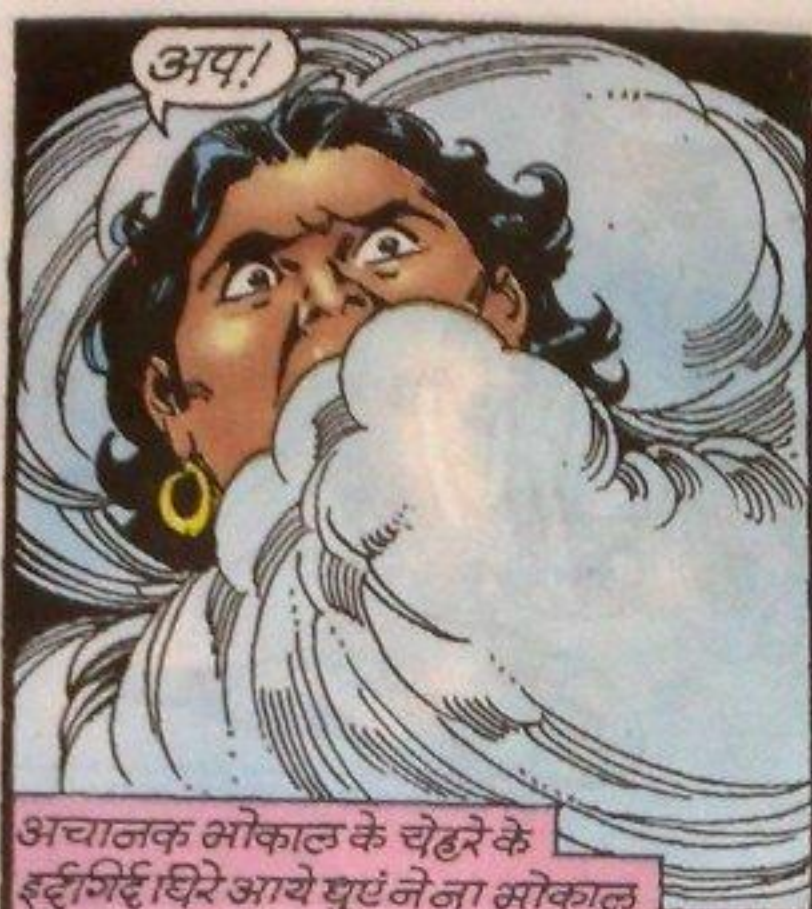
आहह! य... ये
क्या हुआ महाबली। इस
घुएं ने तो हमें बुरी तरह
जकड़ लिया।

आईईSS

ये कोई मायावी
घुआ है। परन्तु तुम
घबराना नहीं।







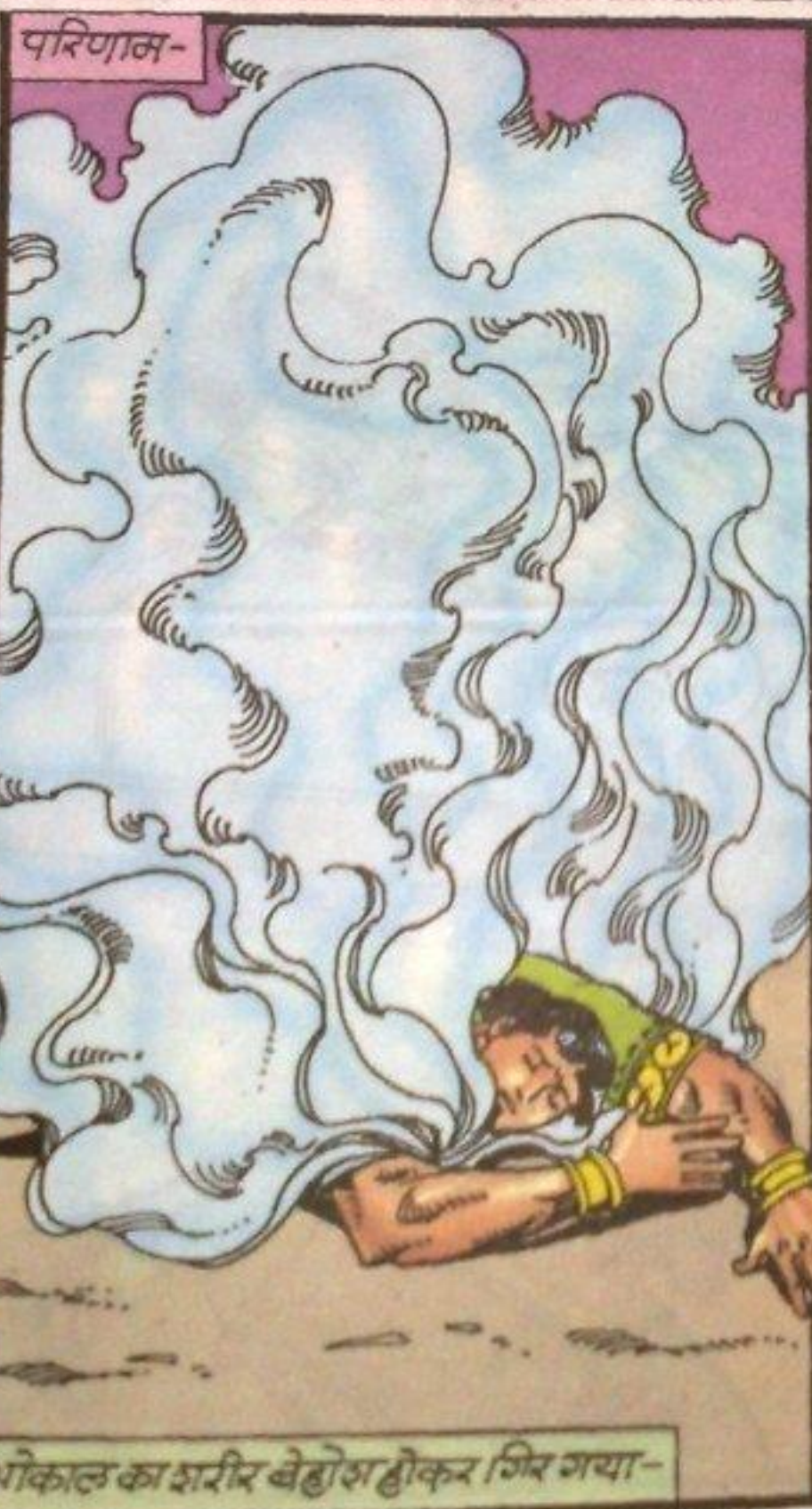
अप!

अचानक भोकाल के चेहरे के इर्दगिर्द धिरे आये घुंने ना भोकाल के कंठ से उसके महागुरु का नाम निकलने दिया-

और ना सांस-



परिणाम-



और इसी के साथ वहां फैला गाढ़ा धुआं और भी गाढ़ा होता चला गया-



भोकाल का शरीर बेहोश होकर गिर गया-

और तब जब वह गाढ़ा धुआं घंटा तो भोकाल वहां नहीं था-

ओह! हम बंधन मुक्त हो गई परन्तु... परन्तु महाबली यहाँ कहीं नहीं दिख रहे।

महाबली कहाँ गये?



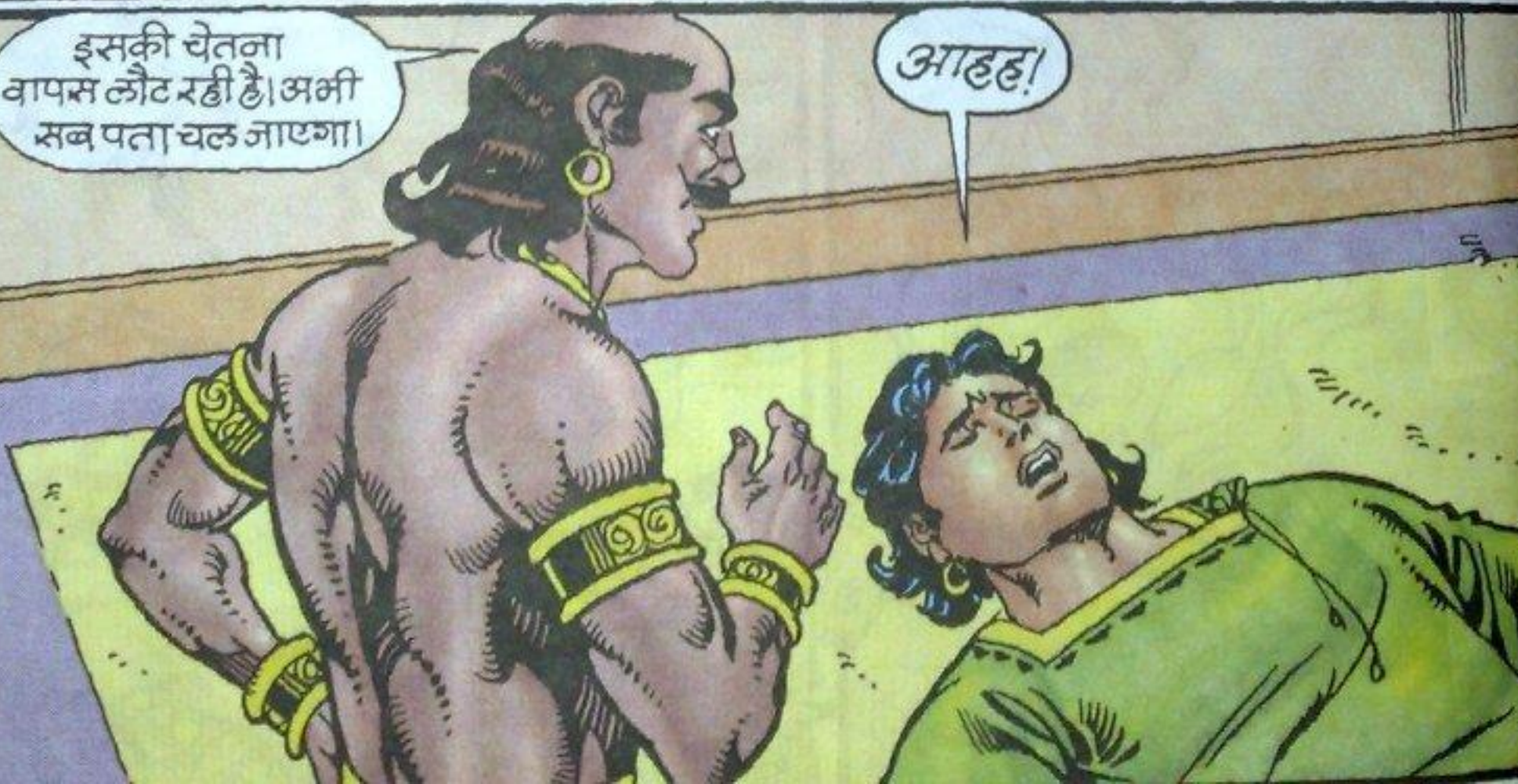
भोकाल यहाँ था-

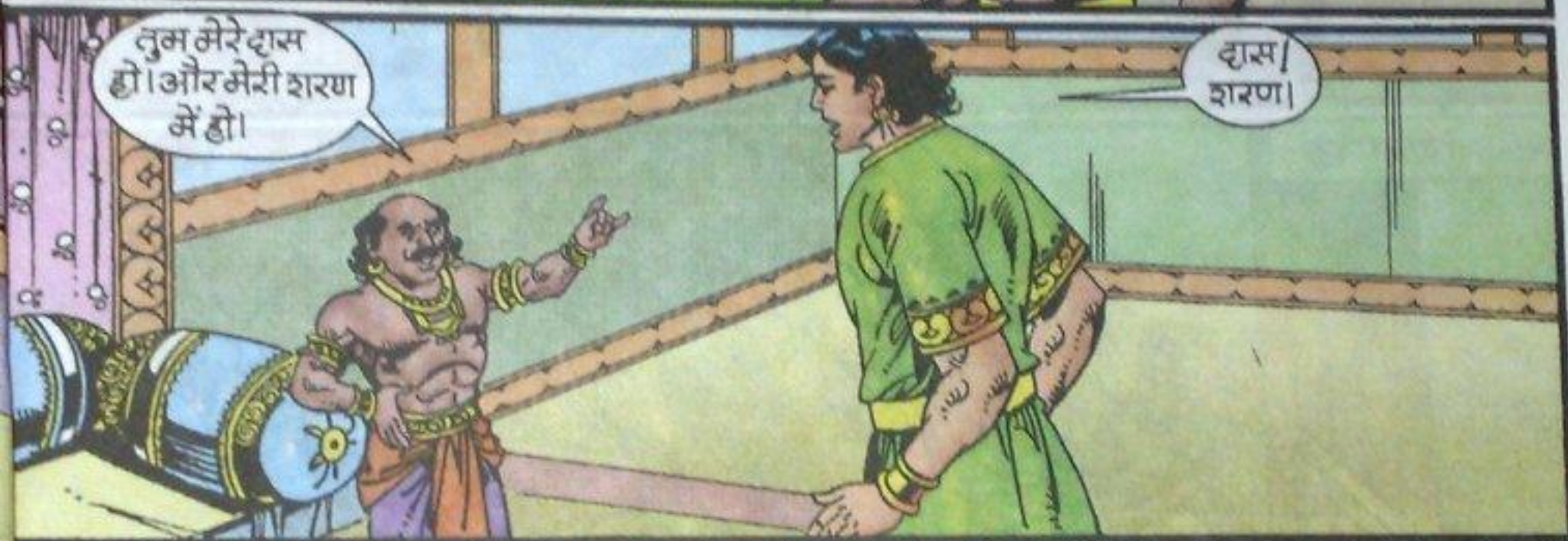
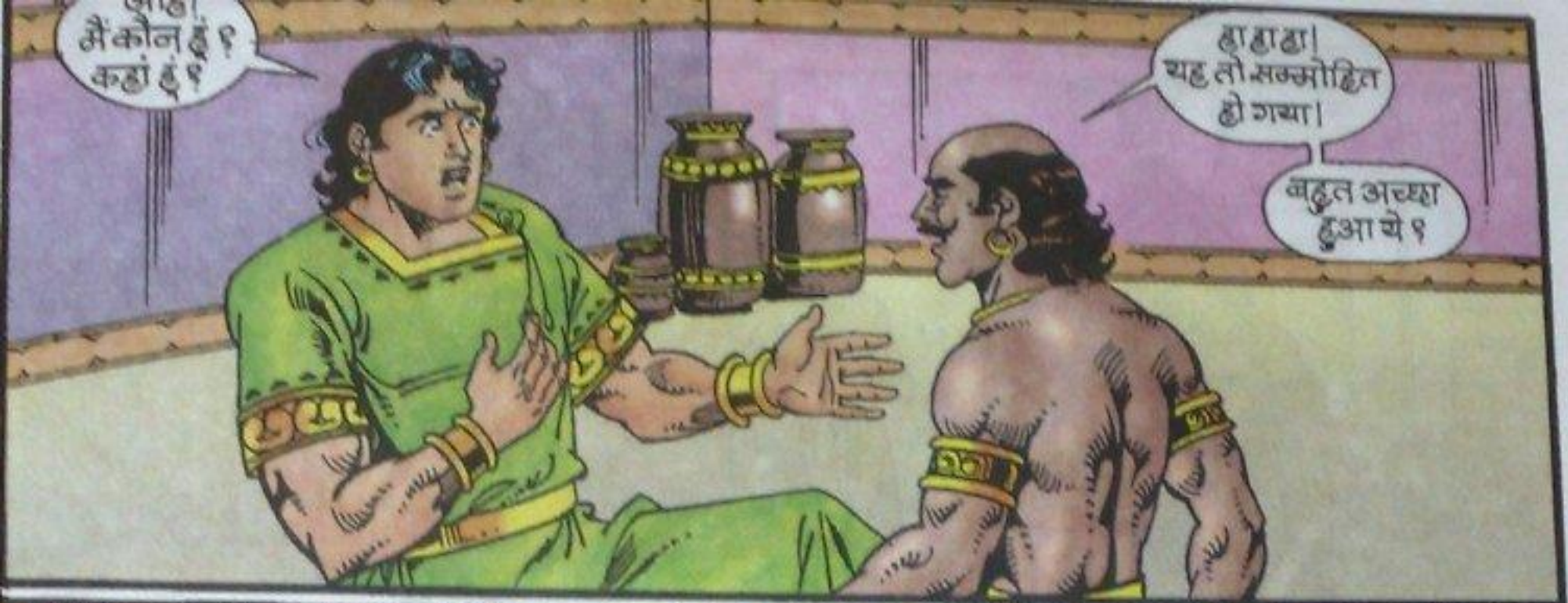
हा हा हा!
आखिर भोकाल मेरे जाल में फँस ही गया।
मायावी धूम्रशक्ति से ना सिर्फ वह अचेत हो गया बल्कि सम्मोहित भी हो गया।



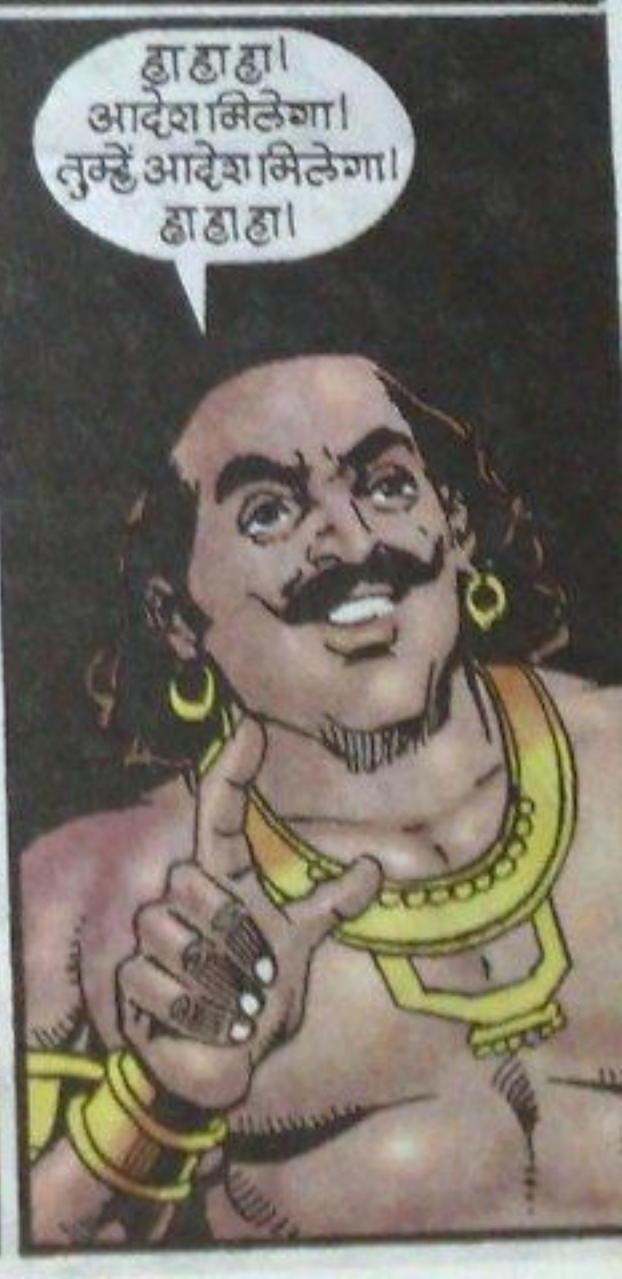
इसकी चेतना वापस लौट रही है। अभी सब पता चल जाएगा।

आहह!





दूसरे ही क्षण ब्रह्मभट्ट के सामने झुक
गया भोकाल-



राजमहल के पट्टे पर खड़े रहकर सैनिक अचानक चौंक पड़े-

सामने
आ।

ये अंधेरे में
कौन खड़ा है
उधर ?



सामने आया वह-



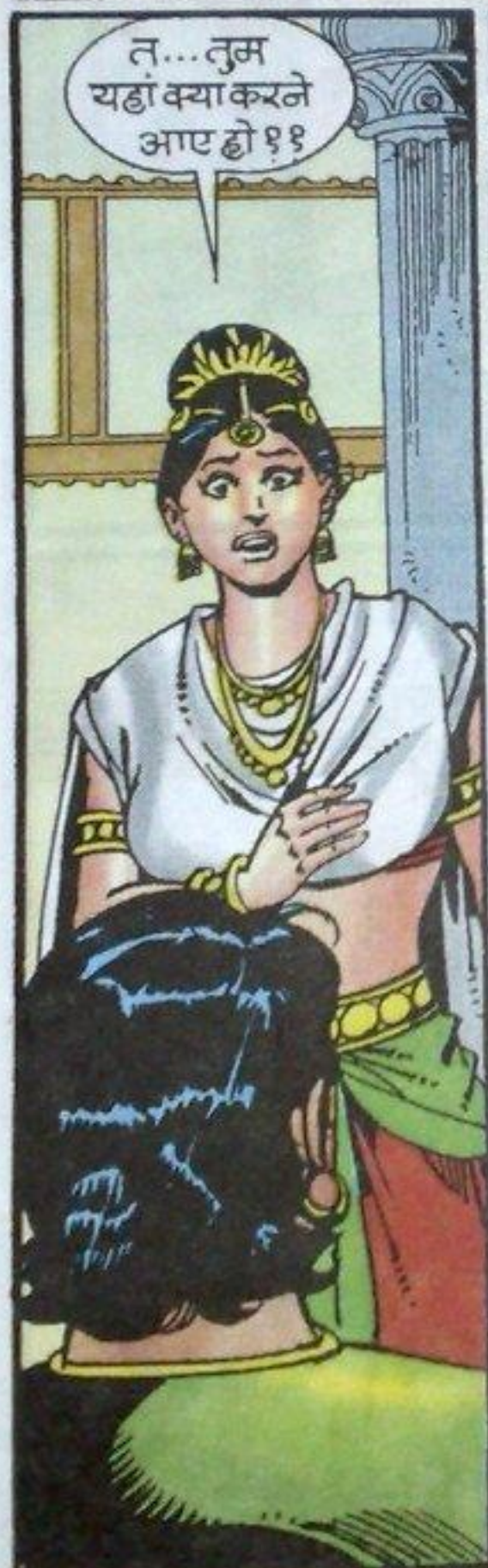
प्रलयकारी रूप में-

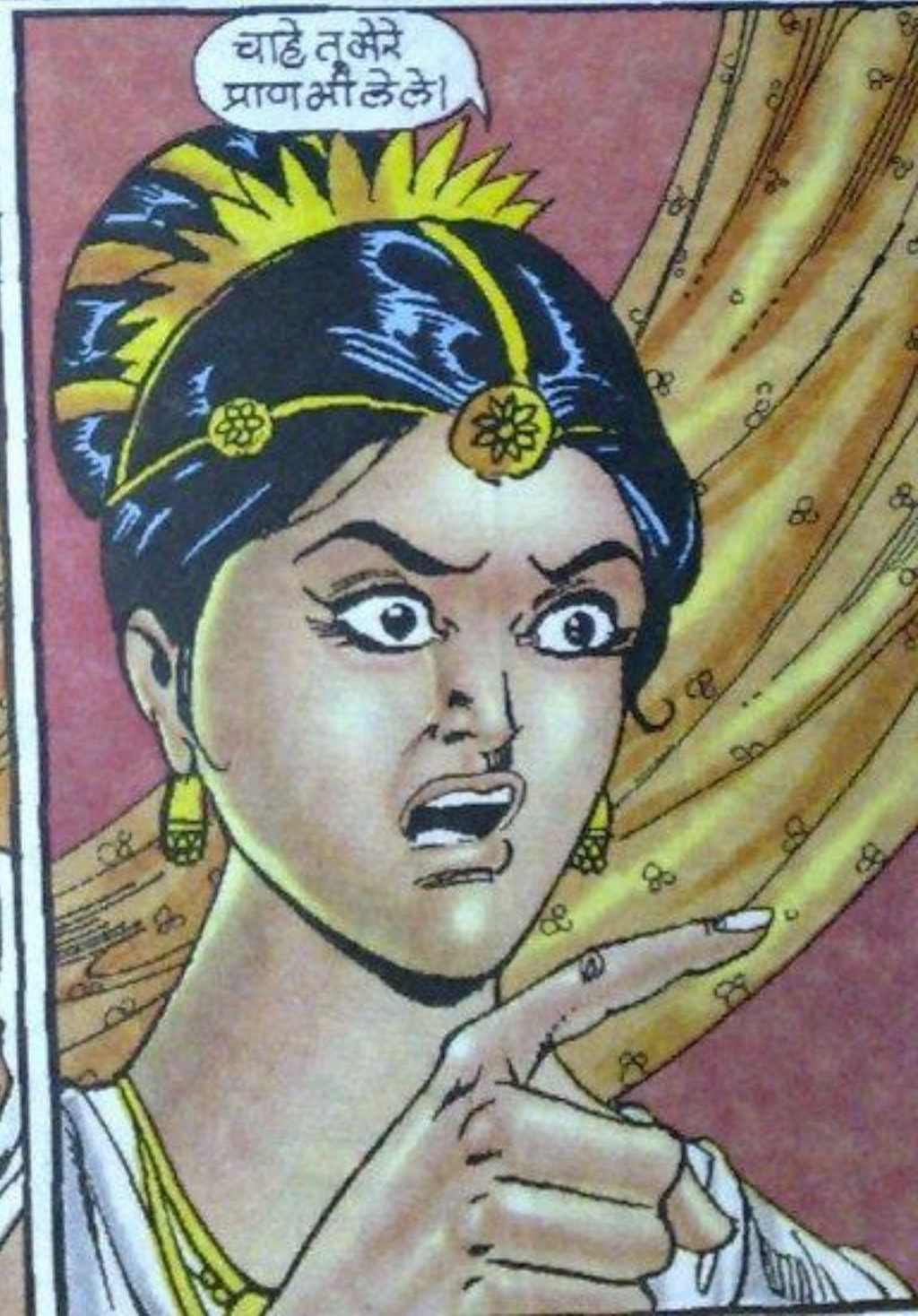
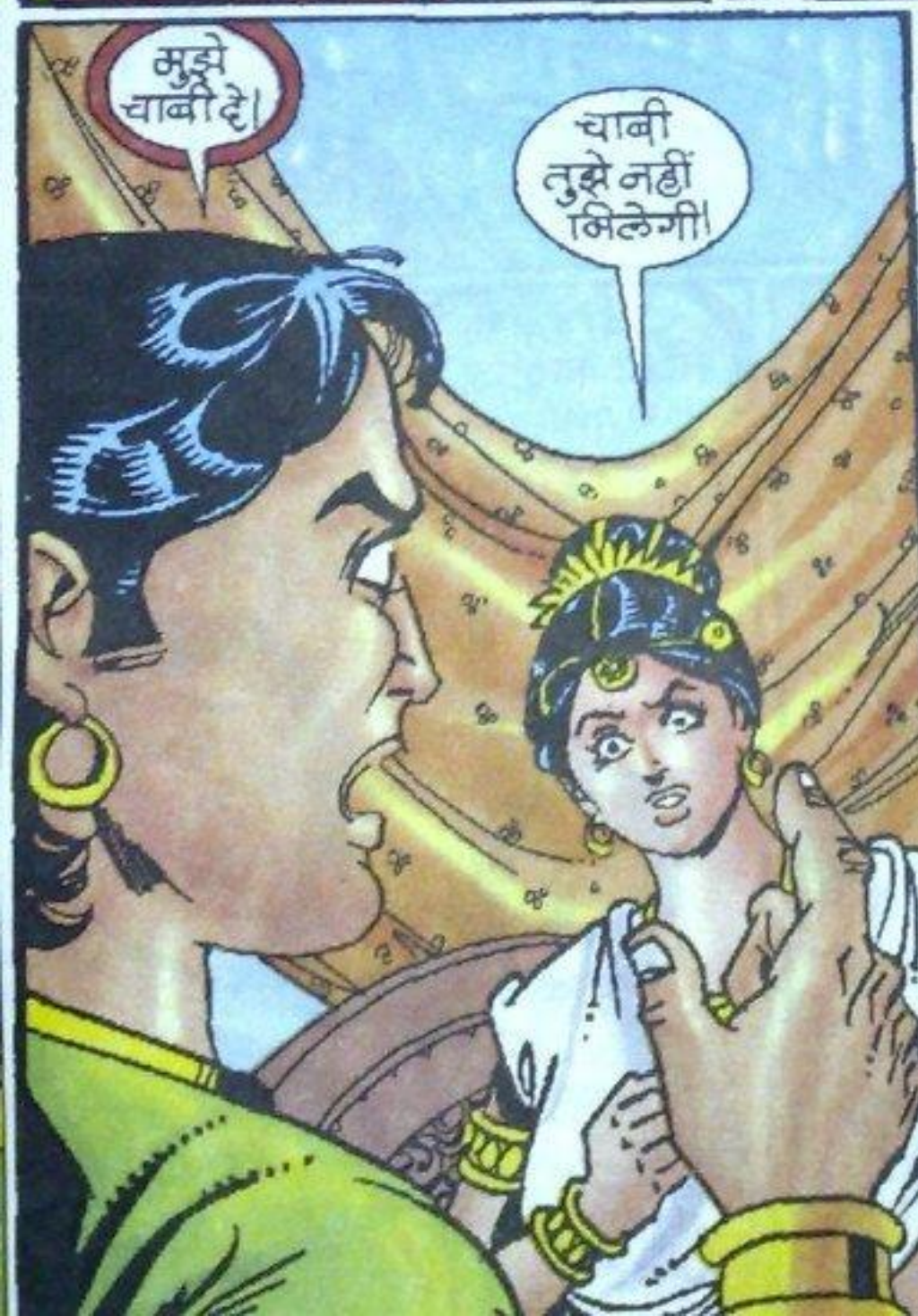
वह कौन था ये जानते ही सभी सैनिकों की आंखें आश्चर्य से फटी की फटी रह गईं-

भोका ल!
महाबली भोका...













एक माँ अपनी पुत्री का दर्द सहन ना कर सकी -



एक माँ को अत्याचारी की
वह बात भी माननी पड़ी -



भोकाल ने ताले में चाबी लगाई -

पलक झपकते ही स्वजाना सामने था -

मुझे
स्वजाना मिल
गया।



अब मुझे तुम
दोनों की आवश्यकता
नहीं। गहरी निद्रा में
सो जाओ।

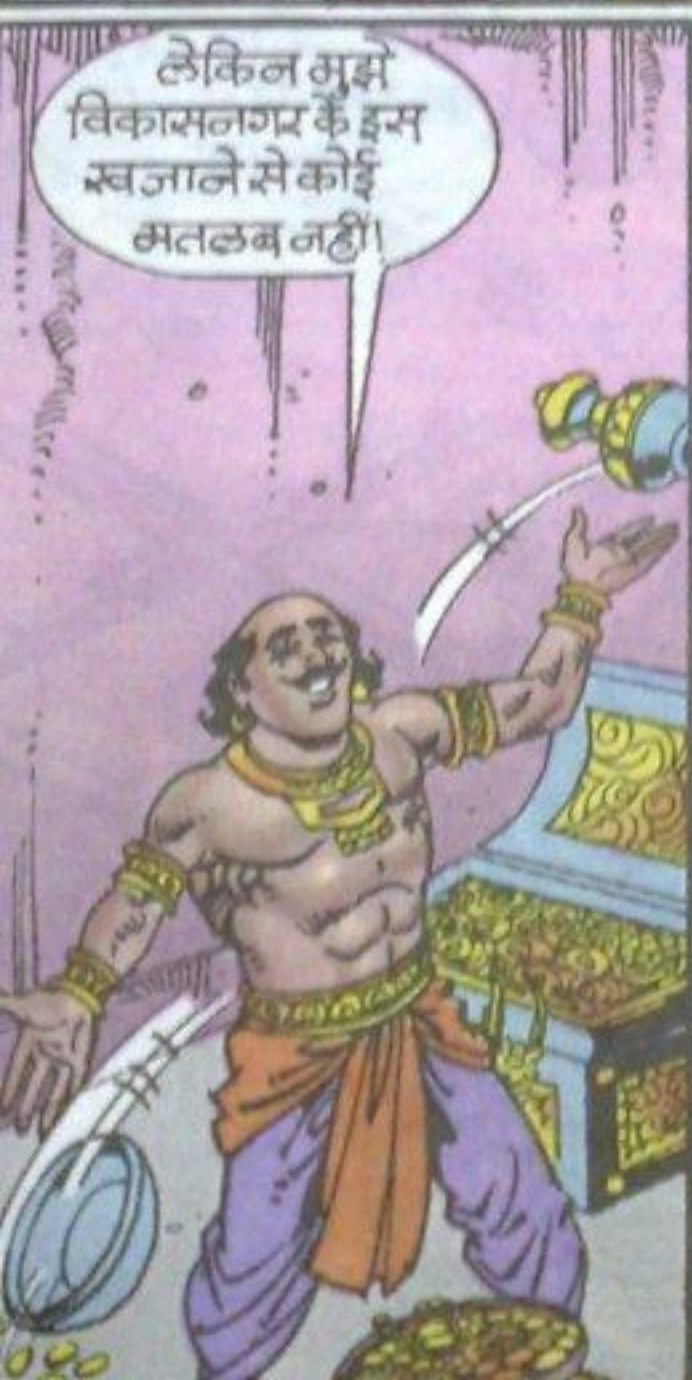


रानी मोहिनी और श्वेता को बेहोश करके -

भोका ल स्वजाने की तरफ पलटा -

अब मुझे यह सारा
स्वजाना अपने स्वामी के
पास पहुंचाना है।





मेरे उस पूर्वज का मुकुट जो
कई सौ वर्ष पहले ब्रह्माण्ड का सबसे
बड़ा शैतान कहलाता था।

... हजारों शक्तियों
से मेरे इस मुकुट की
बढ़ौलत।

राजा विकासमोहन
के एक पूर्वज ने देवताओं से
प्राप्त की हुई एक तलवार से मेरे
पूर्वज का शीश काटकर इस मुकुट
को अपने राज खजाने में रख दिया
था। मेरे कई पूर्वजों ने इसे दुबारा
प्राप्त करने का प्रयत्न किया परन्तु
सफलता आज सिर्फ मेरे
हाथ लगी।

अब यह मुकुट
मेरे सिर पर होगा और
फिर सारे ब्रह्माण्ड पर
मेरा राज होगा।

मैं जो चाहे
करूंगा कोई मुझे नहीं
रोक पाएगा।

ऐसा हो सकता
है लेकिन तब जब इस
मुकुट को तेरे शीश पर
पहुँचने देगा...

भोऽऽकाऽऽले

ओह! भोकाल!
य... ये क्या है...



तुम तो मेरी शक्तियों
के सम्मोहन में थे!

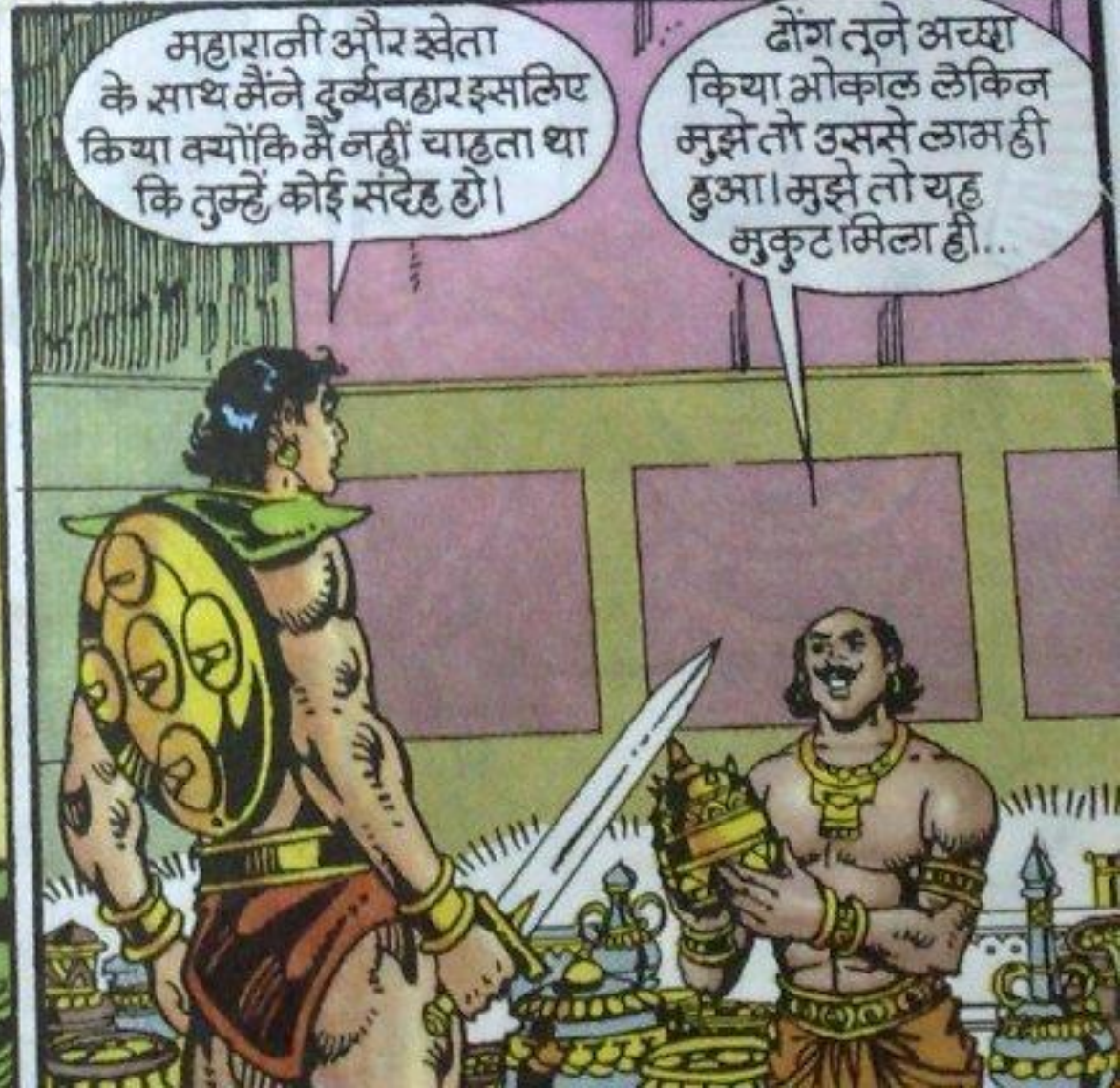
यह तेरी भूल है। मैं
तेरी शक्तियों के सम्मोहन में
कभी नहीं था। मैं तो तेरे उद्देश्य को
साधने लाने के लिए यह सब ढोंग कर रहा
था क्योंकि कोई भी मुझे खजाने में धिपे
रहस्य को बता नहीं रहा था।



जिस समय मुझे मायावी
धुएं ने घेर रखा था उस समय मैंने
प्राणायाम की सहायता से अपनी सांसों
को पूरी तरह रोक लिया था जिससे मुझ
पर धुएं का जरा भी प्रभाव नहीं पड़ा।

महारानी और खेता
के साथ मैंने दुर्व्यवहार इसलिए
किया क्योंकि मैं नहीं चाहता था
कि तुम्हें कोई संदेह हो।

ढोंग तुने अच्छा
किया भोकाल लेकिन
मुझे तो उससे लाभ ही
हुआ। मुझे तो यह
मुकुट मिला ही...





और फिर वो हुआ जिसने भोका ल जैसे व्यक्ति के शरीर में सिहरन दौड़ा दी-

ओह,
नहीं!



...प्रलयकारी भी-

हा हा हा!
डेढ़ हाथ का शरीर
अब कई हाथ का
हो गया है-

ओफ़फ़!



कहनुमद
का डेढ़ हाथ का शरीर भयानक भी हुआ। मरकर भी हुआ और...

अब किसका साहस है जो इस शरीर का सामना कर ले!

साहस तो इस शरीर में कूट कूटकर भरा है। जो तुझ जैसे शैतानों से निपट भी सकता है और...

...उन्हें निपट भी सकता है।

ओपक!

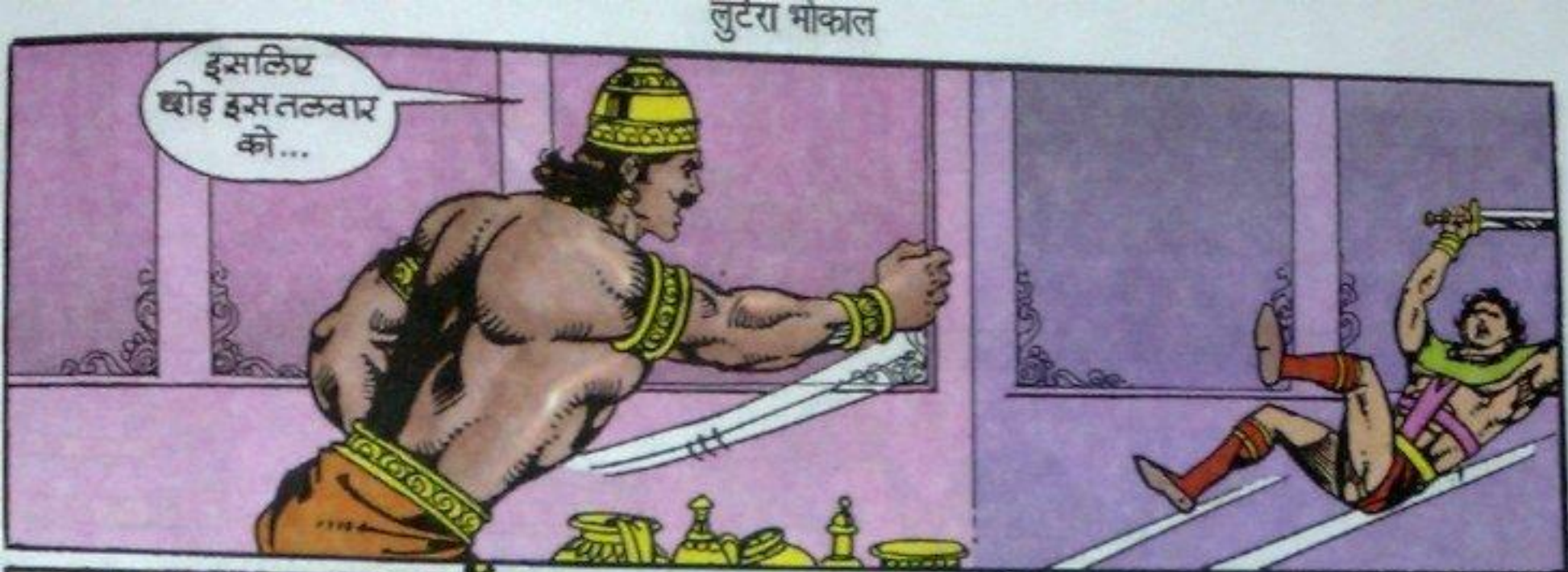
मात्र साहस से क्या होगा। मुझे निपटाने के लिए तेरे पास शक्ति भी तो होनी चाहिए।

शक्ति भी है। देखा!

और बड़ी शक्ति देख।

हा हा हा! तेरी तलवार कितनी भी शक्तिशाली सही भोका ल लेकिन ये उस तलवार का कभी मुकाबला नहीं कर सकती जिससे कभी राजा विकास मोहन के पूर्वज ने यह शैतानी मुकुट पहनने वाले मेरी पूर्वज की गर्दन काटी थी।





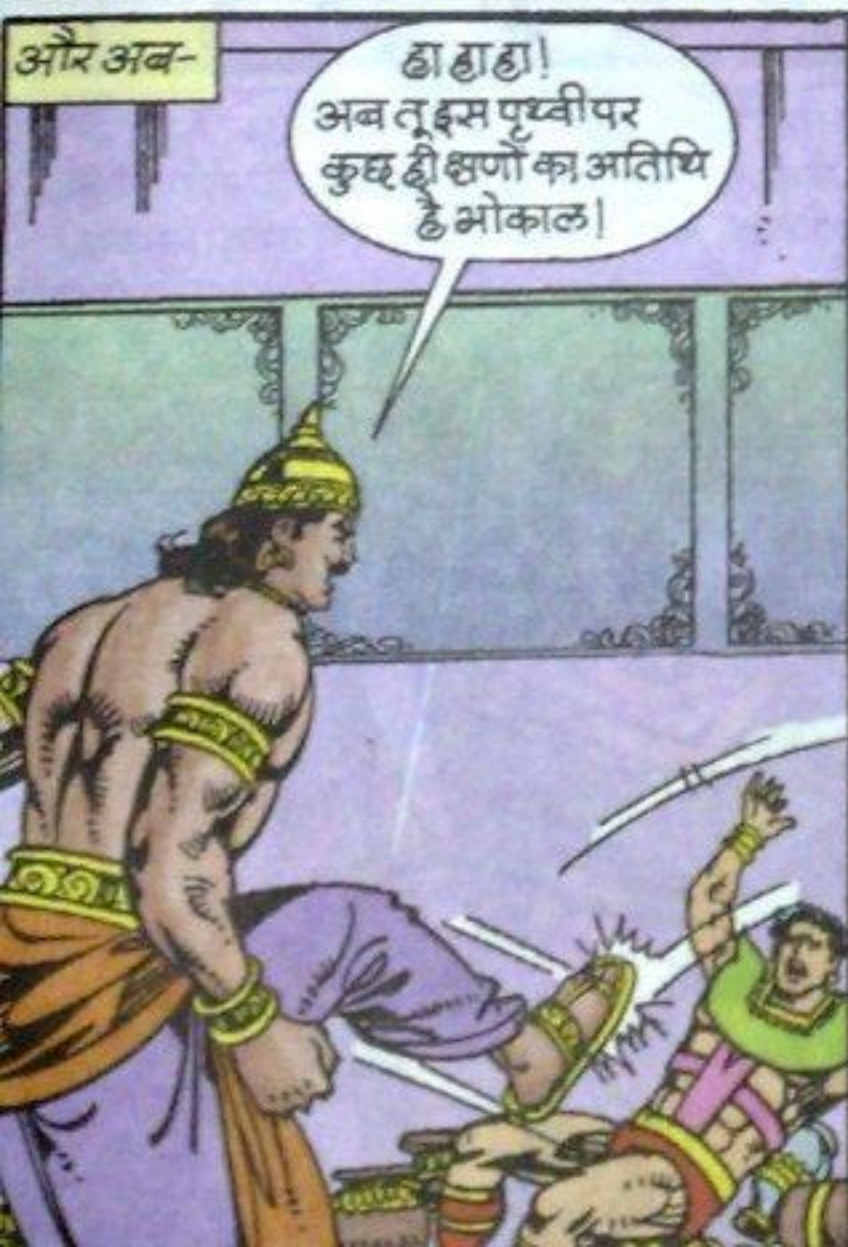
इसलिए
छोड़ इस तलवार
को...



...और
मृत्यु को अपने
गले लगा!

ओफ़फ़!

भोका के हाथ से उसकी तलवार छूट गई-



और अब-

हा हा हा!
अब तू इस पृथ्वी पर
कुछ ही क्षणों का अतिथि
है भोका!



हा हा हा!

धुन्न

ब्रह्मभट्ट
के वारों का तूफान भोका को तिनके की तरह उछाल रहा था-

अचानक-

बस बहुत हुआ
बहुत भट्ट। बंद कर अब
यह सब क्योंकि...



... अब तेरे
समाप्त होने की
वारी है!

हा हा हा खजाने में
रखी एक साधारण तलवार
उठाकर तू मुझे समाप्त करने की
बात कर रहा है मूर्ख!



ओफ्फ! इस तलवार
से ठकराकर मेरी शक्तियां
क्षीण हो गईं। ए... ऐसा
कैसे हुआ?

मेरे हाथ में
थमी तलवार को
ध्यान से देखेगा तो
तेरी मूढ़ बुद्धि में
आसानी से यह बात
आ जाएगी कि मेरे
हाथ में कोई साधारण
तलवार नहीं
बल्कि...

... वह तलवार
थमी है जिसने कभी
तेरे पूर्वज की गर्दन
उड़ाई थी।

... तेरे मुख से इस तलवार
के बारे में सुनकर ही मेरे मस्तिष्क
में यह विचार कौंधा था कि यह
तलवार विकासनगर के खजाने
में ही रखी होगी।



इसीलिए मैंने अपनी तलवार
छोड़कर स्वयं को तेरे प्रहारों का निशाना
बनाया ताकि तू यह समझे कि मैं तेरे वारों से
उछलकर स्वजाने पर गिर रहा हूँ। जबकि सच्चाई
यह थी कि तेरे वारों की आड़ में मैं स्वजाने में से
इस तलवार की खोज कर रहा था। और अब
जब यह तलवार मेरे हाथ में आ गई है तो...



इसके सामने
जा तो तेरी शक्तियों
में टिके रहने का
साहस है...



... और ना
तेरी गर्दन में।



वर्षों पहले की
कहानी एक बार फिर
दोहराई गई थी एक बार फिर
उस शैतानी मुकुट को पहनने
वाले की गर्दन कट गई थी।

एक बार फिर वह मुकुट
विकासनगर के स्वजाने की
शोभा बढ़ा रहा था।

विकासनगर
का स्वजाना सुरक्षित
है महारानी।



धन्यवाद
भोकाळ! विकासनगर
के स्वजाने को बचाने के
लिए भी और विश्व को
बहुममद रूपी तबाही
से बचाने के लिए
भी।



समाप्त